श्रीकंचनपथ

RNI. Reg. No. CHHHIN/2009/30534

डाक पंजीयन क्रं.-छ.ग./ दुर्ग /94/2020-22

साझा करें अपने मित्रों से

सांध्य दैनिक

दुर्ग-रायपुर-बस्तर संभाग

लीपा पोती नहीं सिर्फ सच

संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत- स्व. श्रीमती रजनी अग्रवाल

वर्ष- 13, अंक - 130

श्रीकंचनपथ ONLINE

visit us http://www.shreekanchanpath.com

भिलाई, शुक्रवार 25 फरवरी 2022

पृष्ठ 8- मूल्य 1/-

भारत को महंगी ना पड़ जाए 'चुप्पी' अमेरिका लगा सकता है प्रतिबंध

दिल्ली (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के बीच की लड़ाई अब खूनी हो चुकी है। पहले ही दिन 137 लोगों की मौत की खबर है। अधिकांश हिस्सों में रूसी विमानों से बम बरसाए जा रहे हैं। यूक्रेन में फंसे भारतीय रेसक्यू के लिए गुहार लगा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल व्लादिमीर पुतिन से बात की। आपको यह भी बता दें कि भारत फिलहाल यूक्रेन संकट पर तटस्थ बना हुआ है। रूस के साथ पुरानी दोस्ती इसका बड़ा कारण हो सकता है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा है कि रूस के साथ रक्षा संबंधों को लेकर भारत के साथ उनके मतभेद अभी सुलझे नहीं हैं और उन पर बातचीत चल रही है। यूक्रेन में रूसी कार्रवाई पर भारत का नपातुला रुख अमेरिका को ज्यादा रास नहीं आ रहा है। गुरुवार को जब पत्रकारों ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से यह सवाल पूछा, तो उन्होंने बहुत कम शब्दों में इस ओर इशारा किया कि अमेरिका भारत के रुख से ज्यादा संतुष्ट नहीं है।

बाइडेन सरकार की चीन को लेकर कड़ी नीति के तहत भारत अमेरिका के लिए एक अहम साझेदार के तौर पर उभरा है, लेकिन रूस के साथ उसकी नजदीकियों और यूक्रेन में रूसी सैन्य कार्रवाई पर भारत की चुप्पी ने दोनों देशों के बीच एक असहज स्थिति पैदा कर दी है।

यूक्रेन पर क्या है भारत का रुख?

यूक्रेन पर भारत ने अब तक खुलकर कुछ नहीं कहा है। हालांकि गुरुवार को भारतीय प्रधानमंत्री ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बातचीत में हिंसा रोकने का आग्रह किया था। किंतु, बीते मंगलवार को पेरिस में एक विचार गोष्ठी में भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि यूक्रेन के मुद्दे पर जो कुछ हो रहा है, वह नाटो के विस्तार और सोवियत-युग के बाद रूस के पश्चिमी देशों के संबंधों से जुड़ा है। जबकि हिंद-प्रशांत यूरोपीय फोरम में शामिल अन्य विदेश मंत्रियों की तरह जापानी विदेश मंत्री योशीमासा हायाशी ने रूस की कड़ी निंदा की। भारतीय विदेश मंत्री ने अपना पूरा ध्यान चीन द्वारा पैदा किए गए कथित खतरों पर केंद्रित रखा।

यूक्रेन पर भारत के निष्पक्ष रुख का रूस ने किया स्वागत

इससे पहले सुरक्षा परिषद में भी भारत ने जिस तरह का बयान दिया था, उसे रूस का पक्षधर माना गया। यूक्रेन पर भारत ने कहा था कि सारे पक्षों की रक्षा संबंधी चिंताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। रूस ने भारत के इस रुख का स्वागत करते हुए कहा है कि यूक्रेन के हिस्सों को मिली मान्यता अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत वैध है।

भारत को लेकर संदेह

रूस के साथ भारत के संबंध काफी पुराने हैं लेकिन बीते कुछ सालों में अमेरिका और भारत की नजदीकियां बढ़ी हैं। फिर भी, रूस भारत के लिए सबसे बड़ा रक्षा साझेदार बना हुआ है। भारत 15 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सदस्य है, जहां शुक्रवार रूस की निंदा में एक प्रस्ताव पर मतदान हो सकता है। संभावना जताई जा रही है कि रूस इस प्रस्ताव पर वीटो करेगा जबकि अमेरिका इस वीटो का इस्तेमाल रूस को अलग-थलग करने के लिए कर सकता है। अमेरिका को उम्मीद है कि मौजूदा गणित में 13 सदस्य उसके पक्ष में वोट करेंगे जबकि चीन गैरहाजिर रहना चुनेगा। लेकिन भारत अमेरिका के पक्ष में मतदान करेगा या नहीं, यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। इस मुद्दे पर एक बार पहले भी इसी महीने मतदान हो चुका है जिसमें भारत ने गैरहाजिर रहना चुना था।

एक ट्वीट में जयशंकर ने कहा कि उन्होंने यूक्रेन में हुई गतिविधियों पर ब्लिंकेन से बात की है। साथ ही उन्होंने कहा कि वह रूसी विदेश मंत्री सर्गई लावरोव से भी बात कर चुके हैं और जोर देकर कह चुके हैं कि कूटनीति और बातचीत ही आगे बढ़ने का सबसे अच्छा रास्ता है।

यूरोप और अमेरिका ने किया रूस के खिलाफ प्रतिबंधों का ऐलान

अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा कि जो भी देश रूस के यूक्रेन पर आक्रमण को सहन करता है, उस पर रूस के सहयोग का कलंक लगेगा। जब बाइडेन से पूछा गया कि क्या भारत अमेरिकी रणनीति से सहमत है, तो उन्होंने कहा, हम आज भारत से सलाह-मसविरा कर रहे हैं। हमने यह मामला अब तक पूरी तरह नहीं सुलझाया है। एक बयान जारी कर अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने बताया है कि विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन ने भारतीय विदेश मंत्री डॉ. सुब्रमण्यम जयशंकर से गुरुवार को बातचीत की और रूस के आक्रमण की सामूहिक निंदा और फौरी तौर पर युद्ध विराम व सेनाओं की वापसी की जरूरत पर बल दिया।

भारत-रूस संबंध

भारत की रूस के साथ करीबियां कुछ समय से अमेरिका को परेशान करती रही हैं। बीते साल दिसंबर में पुतिन ने भारत का दौरा किया था जिसमें दोनों देशों के बीच कई रक्षा समझौतों पर दस्तखत हुए थे। तभी भारत ने पुष्टि की थी कि रूस ने जमीन से हवा में मार करने वालीं एस-400 मिसाइलों की सप्लाई शुरू कर दी है। रूस लंबे समय से भारत को हथियारों की सप्लाई करता रहा है। एस-400 मिसाइलों की सप्लाई को भारतीय सेना को आधुनिक बनाने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। भारतीय विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने दोनों पक्षों की बैठक के बाद कहा, सप्लाई इस महीने शुरू हो गई है और जारी रहेगी।

यूक्रेन पर आक्रमण के विरोध में आए रूसी लोग, पुतिन को बताया हत्यारा

यूक्रेन पर रूसी आक्रमण का रूस में विरोध शुरू हो गया है। 24 फरवरी की रात रूस के सेंट पीटर्सबर्ग और राजधानी मॉस्को सहित कई शहरों में लोगों ने युद्ध के विरोध में मार्च निकाला है। यूक्रेन और उसके पश्चिमी सहयोगियों के साथ महीनों से जारी तनाव के बाद रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन में सैन्य अभियान का आदेश दिया था। हमला शुरू करने से पहले पुतिन ने कहा था कि यूक्रेन पर आक्रमण के सिवा उनके पास कोई और विकल्प नहीं बचा था।

रैली में आए लोगों ने पुतिन को बताया हत्यारा

24 फरवरी की रात रूसी लोगों ने यूक्रेन के समर्थन में रैली की। लोगों ने इसे दूसरे विश्व युद्ध के बाद से यूरोप के सबसे काले अध्यायों में से एक बताया है। सेंट पीटर्सबर्ग की एक रैली में एक महिला ने कहा है कि मेरे पास कोई शब्द नहीं है। यह घृणित है। हमारी संवेदनाएं यूक्रेन के साथ हैं। रैली में आए एक शख्स ने पुतिन को जमकर कोसा। उसने पुतिन को हत्यारा बताया और कहा कि यह रूस के लिए शर्म की बात है। उसने कहा कि कोई नहीं बता सकता है कि यह आदमी आगे क्या करने वाला है।

यूक्रेन रूस का दुश्मन नहीं

बता दें कि रूस के कई शहरों में हजारों लोगों ने रैलियों में भाग लिया है जिसमें राजधानी मॉस्को भी शामिल है। ये लोग आक्रोश जताने के लिए सड़कों पर उतर आए थे। रैली में भाग लेने वाले लोगों ने कहा है कि कम से कम मुझे यहां आकर शर्म नहीं आती। आज सुबह मैं बहुत शर्मिंदा था। लोगों ने 'यूक्रेन हमारा दुश्मन नहीं', 'रूस युद्ध के खिलाफहै', 'हमें युद्ध नहीं चाहिए' जैसे नारे लगाए।

खास-खबर

सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से कहाः बिटक्वाइन को लेकर स्पष्ट रुख अपनाएं, बताएं यह वैध है या अवैध

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से यह स्पष्ट करने को कहा है कि भारत मे बिटकॉइन वैध है या नहीं। 2018 में सामने आए बिटकॉइन फ्रॉड के एक मामले के आरोपियों को जांच में सहयोग करने का निर्देश देते हुए कोर्ट ने यह सवाल पूछा है। 4 हफ्ते बाद मामले की अगली सुनवाई होगी। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने 1 फरवरी 2022 को पेश किए गए आम बजट में बिटक्वाइन समेत अन्य क्रिप्टोकरेंसी से होने वाली आय पर 30 फीसदी टैक्स लगाने की घोषणा की थी। इसके साथ ही किसी भी प्रकार के क्रिप्टो असेट के ट्रांजैक्शन पर एक फीसदी टीडीएस लगाने का एलान किया गया था।

18 घंटे से 50 फीट गहरे बोरवेल में फंसा मासूम, कैमरे में देखकर रातभर आवाज लगाते रहे परिजन

सीकर (एजेंसी)। राजस्थान के सीकर के बिजारणिया की ढाणी में 18 घंटे से एक चार साल का मासूम बोरवेल में फंसा हुआ है। बच्चे के माता-पिता और बहन कैमरे पर देखकर रातभर उसे आवाज लगाते रहे। मासूम बच्चा 50 फीट गहरे बोरवेल में फंसा है। बचाव दल की टीम ने करीब 38 फीट तक खुदाई कर ली है। रेस्क्यू टीम से बच्चा सिर्फ 12 फीट की दूरी पर बचा है। ऐस में उम्मीद जताई जा रही है कि उसे जल्द ही सकुशल बाहर निकाल लिया जाएगा। गुरुवार देर शाम से एसडीआरएफ सहित अन्य बचाव दल की टीम रेस्क्यू अभियान चला रहीं हैं। बचाव दल की टीम ने बोरवेल में टोकरी लटका कर मासूम रविन्द्र को ऊपर लाने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। चार साल का मासूम टोकरी की रस्सी पकड़ लेता था पर उस पर चढ़ नहीं पाया। उधर, बचाव दल की टीम बोरवेल के पास खुदाई कर एक सुरंग बना रही है। 50 फीट गहरे बोरवेल तक पहुंचने के लिए टीम ने 38 फीट तक खुदाई कर ली है। खुदाई का काम लगातार किया जा रहा है। बचाव दल की टीम ने बच्चे तक पाइप के जरिए ऑक्सीजन पहुंचाई है। उसे खाने के लिए बिस्किट भी दिए गए है। बच्चे के परिजन उससे लगातार बात भी कर रहे हैं। हालांकि, बच्चे के बोरवेल में गिरने के बाद से उसके माता-पिता और बहन का भी बुरा हाल, लेकिन वह उसे दिलासा देने में लगे हुए हैं।

पाकिस्तान को तगड़ा झटकाः नेशनल बैंक को भरना होगा 414 करोड़ रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक ओर जहां पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान रूस की मेहमान नवाजी का लुत्फ उठाने पहुंचे, वहीं दूसरी ओर अमेरिका ने पाकिस्तान के नेशनल बैंक पर 55 मिलियन डॉलर (करीब 414 करोड़ रुपये) का जुर्माना लगाया है। इस संबंध में जारी रिपोर्ट के अनुसार, यू.एस. फेडरल रिजर्व और न्यू यॉर्क स्टेट डिपार्टमेंट ऑफ फाइनेंशियल सर्विसेज ने यह जुर्माना एंटी मनी लॉन्ड्रिंग नियमों का उल्लंघन करने पर लगाया गया है।

अनुपालन कमियों के चलते कार्रवाई

न्यूयॉर्क के नियामक की ओर से कहा गया कि नेशनल बैंक ऑफ पाकिस्तान और उसकी न्यूयॉर्क शाखा न्यूयॉर्क स्टेट डिपार्टमेंट ऑफ फाइनेंशियल सर्विसेज के साथ किए गए एक सहमति आदेश के अनुसार 55 मिलियन डॉलर का जुर्माना देने पर सहमत हुए हैं। रिपोर्ट में बताया गया कि नेशनल बैंक ऑफ पाकिस्तान ने बार-बार नियामक चेतावनियों के बावजूद अपनी न्यूयॉर्क शाखा में गंभीर अनुपालन कमियों को वर्षों तक बने रहने दिया। गौरतलब है कि 1949 में स्थापित कराची स्थित, राज्य के स्वामित्व वाला वित्तीय संस्थान, न्यूयॉर्क में मौजूद एकमात्र पाकिस्तानी बैंक है।

- सीएम बघेल ने कहाः हर संभव मदद की कोशिश जारी, अब तक छत्तीसगढ़ के 75 लोगों ने किया सम्पर्क

श्रीकंचनपथ न्यूज

यूक्रन में मौजूद छत्तीसगढ़ के लोगों की मदद के लिए दिल्ली में हेल्प सेंटर स्थापित

रायपुर। यूक्रेन में मौजूद छत्तीसगढ़ राज्य के नागरिकों एवं छात्रों की सहायता हेतु मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के निर्देश पर दिल्ली में हेल्प सेंटर गठित किया गया है। यूक्रेन में उत्पन्न संकट को ध्यान में रखते हुए वहां प्रवासित छत्तीसगढ़ के लोगों की सहायता एवं समन्वय के लिए छत्तीसगढ़ भवन नई दिल्ली आवासीय आयुक्त कार्यालय के सम्पर्क अधिकारी डॉ. गणेश मिश्र को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। डॉ. मिश्र के दूरभाष क्र मां क -011-46156000, मोबाईल नम्बर 99970-60999 एवं फेक्स नम्बर-011-46156030 से सम्पर्क कर छत्तीसगढ़ के नागरिक इस हेतु सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि यूक्रेन का वर्तमान संकट चिन्ता का विषय है। यूक्रेन में 20 हजार विद्यार्थी फंसे हुए हैं, उसमें छत्तीसगढ़ राज्य के भी हैं। उनकी मदद के लिए दिल्ली में हमने हेल्प सेंटर प्रारंभ किया है, वहां लोग लगातार सम्पर्क कर रहे हैं। हम हर स्तर पर मदद करने की कोशिश कर रहे हैं। भारत सरकार और विदेशी दूतावास से लगातार सम्पर्क में हैं कि हम अपने विद्यार्थियों को कैसे छत्तीसगढ़ वापस ला सकें। कूटनयिक चर्चा तो भारत सरकार को करनी होगी। राज्य शासन की ओर से हमने इसके लिए अधिकारी नियुक्त किया है और लगातार सम्पर्क में हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा केन्द्र शासन से भी समन्वय बनाकर छत्तीसगढ़ के नागरिकों की सुरक्षित वापसी के प्रयास किए जा रहे हैं। यह कार्य भारतीय विदेश मंत्रालय के सहयोग और समन्वय के बिना सम्भव नहीं है। फिलहाल केन्द्र सरकार द्वारा यूक्रेन में मौजूद भारतीय नागरिकों को अपने-अपने स्थानों में सुरक्षित रूप से बने रहने की सलाह दी गई है।

मनी लॉन्ड्रिंग ऐक्ट के तहत अब तक बरामद हुई 98,000 करोड़ की संपत्ति, केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को जानकारी दी है कि मनी लॉन्ड्रिंग ऐक्ट के तहत अब तक 98,000 करोड़ रुपये की संपत्तियां जब्त की जा चुकी है। हालांकि केंद्र सरकार ने यह भी स्वीकार किया है कि इस कानून के तहत सजा मिलने वाले लोगों की संख्या काफी कम है। जस्टिस एएम खानविलकर, डी माहेश्वरी और सीटी रवि कुमार की बेंच को सरकार ने बताया कि प्रवर्तन निदेशालय की सक्रियता के चलते बैंकों को बड़े पैमाने पर उनकी डूबी हुई रकम वापस मिल पाई है। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा, प्रिवेंशन ऑफमनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के सेक्शन 5 के तहत अब तक 98 हजार करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की जा चुकी है।

उन्होंने कहा कि जब्त की गई संपत्ति में से 55,899 करोड़ रुपये की रकम को अथॉरिटीज की ओर से कन्फर्म किया जा चुका है कि इन्हें गड़बड़ी से अर्जित किया गया था। इसके अलावा बड़ी रकम ऐसी भी है, जिसके बारे में फिलहाल जांच की जा रही है। अब तक मनी लॉन्ड्रिंग ऐक्ट के तहत की गई कार्रवाई के खिलाफ 242 याचिकाएं दाखिल की जा चुकी हैं। इन लोगों का कहना है कि सरकार की ओर से राजनीतिक विरोधियों पर निशाना साधने के लिए इस कानून का इस्तेमाल किया गया है। तुषार मेहता ने कहा कि यह कानून 2005 में आया था, लेकिन इसके तहत शिकायतें दर्ज होने की शुरुआत 2012-13 में हुई थी।

इस दौरान प्रवर्तन निदेशालय ने कहा कि अब तक मनी लॉन्ड्रिंग ऐक्ट के तहत कुल 930 केस दर्ज किए गए हैं, लेकिन अब तक 21 लोग ही दोषी करार दिए गए हैं। गौरतलब है कि मनी लॉन्ड्रिंग ऐक्ट के तहत हाल ही में ईडी ने एनसीपी के सीनियर नेता और महाराष्ट्र सरकार के मंत्री नवाब मलिक को भी गिरफ्तार किया है। इसके बाद से ही एनसीपी और शिवसेना लगातार भाजपा पर हमला बोल रहे हैं। उनका कहना है कि केंद्र सरकार एजेंसियों का बेजा इस्तेमाल कर रही है और राजनीतिक विरोधियों को फंसाने के लिए उन पर छापे डलवाए जा रहे हैं।

सीएम का पीएम पर तंज- छत्तीसगढ़ मॉडल को करो कॉपी, बघेल ने पुरानी पेंशन बहाली के दिए संकेत

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल उत्तर प्रदेश के चुनावी दौरे से छत्तीसगढ़ लौट आए हैं। रायपुर लौटते ही सीएम ने सरकारी कर्मचारियों की पुरानी पेंशन बहाल करने के संकेत दिए। सीएम ने कहा कि राज्य की वित्तीय स्थिति की समीक्षा के बाद जो संभव हो पाएगा करेंगे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 10 मार्च के बाद छुट्टा पशुओं के बारे में निर्णय लेने के बयान पर भी तंज कसा। भूपेश ने कहा कि विचार क्या करोगे, छत्तीसगढ़ मॉडल को कॉपी करोगे।

सीएम भूपेश बघेल ने रायपुर के एयरपोर्ट पर गोधन न्याय योजना की आलोचना करने वाले छत्तीसगढ़ के भाजपा नेताओं पर पलटवार किया। उन्होंने कहा, तब ये लोग गोबर को राजकीय चिन्ह बनाने का सुझाव दे रहे थे। आज उसके नेता और हमारे प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि 10 मार्च के बाद निर्णय लेंगे। विचार मैंने कर लिया है। भूपेश ने कहा कि विचार क्या करोगे, छत्तीसगढ़ मॉडल को कॉपी करोगे। इसके अलावा और क्या रास्ता है। गोबर खरीदने की बात है। हम यहां गोबर खरीद रहे हैं और उससे वर्मी कम्पोस्ट, दीया, बिजली, गमला, गो काष्ठ बना रहे हैं और बिजली भी बना रहे हैं। हमने रास्ता दिखा दिया है। प्रधानमंत्री से यह भी कहूंगा कि धान भी 2500 रुपये में खरीद लें, जिससे देश के किसानों का भला हो जाएगा।

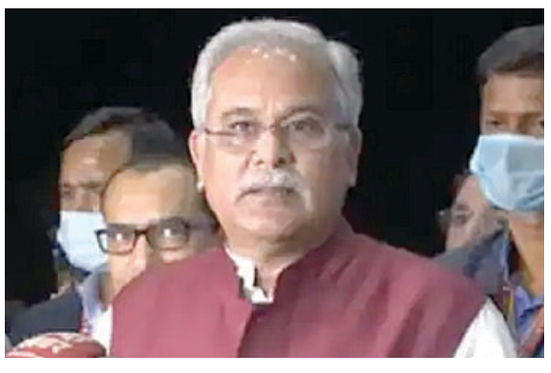

यूपी से भाजपा की सरकार जाने वाली है

सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि उत्तर प्रदेश से भारतीय जनता पार्टी जा रही है, इतना तय है। चार चरण के चुनाव हो गए हैं। तीन चरण के चुनाव बचे हुए हैं। उनकी धर्म और जाति की राजनीति नहीं चली। पांच सालों में भाजपा विधायकों ने कुछ नहीं किया। उत्तर प्रदेश की जनता में सरकार को लेकर भारी आक्रोश है। अब स्पष्ट दिखाई देने लगा है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार जाने वाली है।

पुरानी पेंशन पर समीक्षा के बाद निर्णय

छत्तीसगढ़ में पुरानी पेंशन बहाली से जुड़े एक सवाल पर सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि प्रदेश के लोगों को देने का काम हम लगातार कर रहे हैं। राजस्थान ने पुरानी पेंशन बहाल की घोषणा हुई है तो अब इस पर चर्चा शुरू हुई है। इसकी पूरी कार्ययोजना को देखा जाएगा। छत्तीसगढ़ में राज्य की वित्तीय स्थिति की समीक्षा के बाद जो संभव हो पाएगा करेंगे। सीएम ने कहा कि उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में लोग भी लोग मांग कर रहे हैं।

मोदी जी से कहूंगा- बजरंगियों को संभालें

सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि छुट्टा पशुओं के समस्या की जड़ भाजपा, बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद वाले ही हैं। पांच साल पहले उत्तर प्रदेश में भी आवारा पशुओं से कोई परेशानी नहीं थी। विहिप व बजरंग दल वाले मवेशी ले जाने वालों को केवल कत्लखाना ले जाने वाला ही समझे। यह समझकर उनकी पिटाई कर दी। एफआईआर दर्ज करवा दी। हत्या तक हुई और उनसे पैसे भी वसूले। व्यापारियों ने मवेशी बाजार बंद कर दिए, व्यापार बंद हो गया तो मवेशी कहां जाएंगे। भूपेश ने कहा कि मैं मोदी जी से कहूंगा कि वे बजरंगियों को संभालें।

संपादकीय

युद्ध और चिंताएं

युद्ध अब शुरू हो चुका है। पिछले कुछ सप्ताह से पूर्वी यूरोप में जो रणभेरी बज रही थी, उसे इसी अंजाम पर पहुंचना था। फ्रांस और जर्मनी की बीच-बचाव की कोशिशें, अमेरिका की पाबंदी की घुड़कियां और संयुक्त राष्ट्र की मैराथन बैठकें, रूस को यूक्रेन पर हमला बोलने से नहीं रोक सकीं। रूस हमला करेगा, यह सोमवार को तभी स्पष्ट हो गया था, जब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपने टेलीविजन संबोधन में कहा था कि वह यूक्रेन की संप्रभुता को मान्यता नहीं देते। अगले ही दिन रूस ने पूर्वी यूक्रेन के उन दो इलाकों को मान्यता दे दी थी, जो यूक्रेन से बगावत करके उससे अलग होने की घोषणा कर चुके थे। रूसी सेनाएं जब इन दो इलाकों की ओर रवाना हुईं, तभी युद्ध की शुरुआत हो चुकी थी। बस इसकी घोषणा भर बाकी थी। अब जब यह घोषणा भी हो चुकी है और यूक्रेन के विभिन्न इलाकों से बमों के धमाके सुनाई देने शुरू हो चुके हैं, तब न ऐसी ताकतें दिख रही है, और न ही ऐसी समझदारी कहीं नजर आ रही, जो इस आग को शांत करने की ठोस पहल करती हो।

> कोविड महामारी के बाद पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं जिस समय पटरी पर लौटने की कोशिश कर रही हैं, उस समय यह सब आर्थिक विकास के लक्ष्यों को बड़ा झटका दे सकता है। पर भारत की तत्काल दिक्कत उन भारतीयों को लेकर है, जो अभी यूक्रेन में फंसे हुए हैं। भारत ने उन्हें वापस लाने की आपात योजना जरूर बनाई थी, पर युद्ध के कारण यूक्रेन के एयरस्पेस को बंद कर दिया गया है। यही समय है, जब तनाव बढ़ाने के बजाय सोच-समझकर अमन-चैन की दिशा में प्रयास किए जाएं।

हालांकि, युद्ध की खबरें आने के बाद ही यूक्रेन ने दावा किया है कि उसने दुश्मन के पांच विमान और एक हेलीकॉप्टर मार गिराए हैं। युद्ध के दौरान ऐसे दावों का सच जानना आसान नहीं होता, लेकिन एक बात स्पष्ट है कि जहां तक सैनिक ताकत का सवाल है रूस कहीं ज्यादा ताकतवर है। इसे हम आठ साल पहले हुई उस लड़ाई में भी देख चुके हैं, जब मॉस्को ने बहुत आसानी से यूक्रेन से क्रीमिया छीन लिया था। इसलिए यूक्रेन अब अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के देशों की ओर देख रहा है कि उनकी सेनाएं आकर उसकी रक्षा करें, लेकिन अभी तक किसी ने भी इस मैदान में कूदने की इच्छा नहीं दिखाई है। सबको पता है, इसके बाद जंग फिर यूक्रेन तक सीमित नहीं रहेगी, लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि यूक्रेन को पूरी तरह रूस की दया पर छोड़ दिया जाएगा? कभी यूक्रेन के पास ढेरों परमाणु हथियार हुआ करते थे, उसने अपने ज्यादातर हथियार अमेरिका, रूस और ब्रिटेन की सुरक्षा गारंटी के बाद त्याग दिए थे। अब उसके पास ऐसे कितने हथियार बचे हैं, पता नहीं, लेकिन सुरक्षा गारंटी का मुद्दा भुलाया जा चुका है।

चिंताएं हालांकि और भी हैं। पश्चिमी यूरोप के बहुत सारे देश पेट्रोल, गैस जैसी अपनी ईंधन की जरूरतों के लिए रूस से होने वाले आयात पर निर्भर हैं। तनाव अगर लंबा खिंचता है और रूस से ईंधन की आपूर्ति बंद होती है, तो वे खाड़ी के देशों का रुख करेंगे, जिसका अर्थ होगा विश्व बाजार में पेट्रोल की कीमतों का बढ़ना। कीमतें बढ़नी शुरू भी हो गई हैं। अगर ये और बढ़ती हैं, तो भारत जैसे उन देशों के लिए भी नई मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं, जिनके विदेशी मुद्राकोष का बड़ा हिस्सा पेट्रोलियम आयात में ही खप जाता है। कोविड महामारी के बाद पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं जिस समय पटरी पर लौटने की कोशिश कर रही हैं, उस समय यह सब आर्थिक विकास के लक्ष्यों को बड़ा झटका दे सकता है। पर भारत की तत्काल दिक्कत उन भारतीयों को लेकर है, जो अभी यूक्रेन में फंसे हुए हैं। भारत ने उन्हें वापस लाने की आपात योजना जरूर बनाई थी, पर युद्ध के कारण यूक्रेन के एयरस्पेस को बंद कर दिया गया है। यही समय है, जब तनाव बढ़ाने के बजाय सोच-समझकर अमन-चैन की दिशा में प्रयास किए जाएं।

> **ऑटो उद्योग इस समय अभूतपूर्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है और सरकार ऐसी नीतियों और योजनाओं पर काम करने के प्रति कटिबद्ध है जिनसे इस उद्योग के लिए इन परिवर्तनों को अपनाना सहज हो सके। सरकार को भरोसा है कि ऑटो उद्योग इन नीतियों का सर्वोत्तम उपयोग करेगा और हम ऑटो विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, ऑटो विनिर्माण एवं तकनीक में प्रगतिशीलता और जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने के तीन महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।**

ऑटो विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर

केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री महेंद्र नाथ पाण्डेय

ऑटो उद्योग, उन्नत, नई और स्वच्छ तकनीक की ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में बीजेपी गठबंधन सरकार भारत के विनिर्माण क्षेत्र को दुनिया का सबसे अधिक मांग वाला क्षेत्र बनाने के प्रयास कर रही है। सरकार ने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समग्र और एकीकृत योजना तैयार की है जिसमें अनुपालन को कम करनाए कारोबारी सुगमता को बढ़ावा देनाए लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने के लिए बहु-मॉडल लॉजिस्टिक्स ढांचे का निर्माण करना और इन सबसे बढ़कर उत्पादन-सम्बद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) स्कीमों के माध्यम से विनिर्माण को बढ़ावा देना शामिल हैं। इन पीएलआई योजनाओं का उद्देश्य महंगे उत्पादों के लिए उद्योगों को क्षतिपूर्ति करना हैं क्योंकि उत्पादों का महंगा होना इस उद्योग के बड़े पैमाने पर विस्तार में सबसे बड़ी बाधा है।

हमारा 'ऑटो उद्योग' पीएलआई स्कीम के लिए चिह्नित प्रमुख क्षेत्रों में से एक है जो विनिर्माण की रीढ़ है और जिसे अक्सर 'सनराइज सेक्टर' तथा 'चैंपियन सेक्टर' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें बैकवार्ड और फारवार्ड लिंकेज काफी गहरे होते हैं। ऑटोमोटिव क्षेत्र का कामकाज मूलत: भारी उद्योग मंत्रालय देखता हैए इसलिए हमने इस क्षेत्र के लिए ऐसी नीतियां और योजनाएं बनाई हैं जिनसे आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिले और भारत विश्व में ऑटो निर्माण में अग्रणी बन सके।

हमने इस उद्योग की मुख्य समस्याओं को समझने के लिए सभी संबंधित पक्षों के साथ व्यापक परामर्श किया और फिर ऐसी नीतियां तैयार कीं जिनसे भारत उन्नत ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकी उत्पादों, उन्नत रसायन सेल और पर्यावरण की दृष्टि से स्वच्छ वाहनों के उत्पादन में अग्रणी बन सके।

पीएलआई स्कीम के तहत ऑटो सेक्टर के लिए 25,938 करोड़ रूपएए उन्नत रसायन सेल के लिए 18,100 करोड़ रूपए और हाइब्रिड तथा इलेक्ट्रिक वाहनों का तीव्र अंगीकरण और विनिर्माण यानी फेम स्कीम के लिए 10,000 करोड़ रूपए यानी कुल मिलाकर लगभग 54,000 करोड़ रूपए निर्धारित किए गए हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य ऑटो उद्योग में लागत अधिकता पर काबू पाना और इस उद्योग को इन क्षेत्रों में अग्रणी बन सकने योग्य बनाना है। इन योजनाओं के साथ इलेक्ट्रॉनिक्स ;ऑटो इलेक्ट्रॉनिक्स सहितद्ध और सेमीकंडक्टर के लिए प्रोत्साहन स्कीमों के जुड़ जाने से ऑटो उद्योग को और अधिक फायदा होगा और भारतीय तथा विदेशी बाजारों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ऑटोमोटिव उत्पादों की आपूर्त-श्रृंखला मज़बूत हो सकेगी।

ये योजनाएं देश को पारंपरिक जीवाश्म ईंधन-आधारित ऑटोमोबिल परिवहन प्रणाली की तुलना में पर्यावरण की दृष्टि से स्वच्छ, टिकाऊ, उन्नत और अधिक कुशल इलेक्ट्रिक वाहन को अपनाने के लिए प्रेरित करेंगी क्योंकि जहां एक तरफ इलेक्ट्रिक वाहन के खरीदारों को फेम योजना के माध्यम से प्रोत्साहन दिया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ पीएलआई स्कीम के माध्यम से ऑटो सेक्टर और उन्नत रसायन सेल के लिए आपूर्ति पक्ष को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

ऑटो पीएलआई स्कीम शुरू करने से पहलेए उद्योग जगत के साथ शुरुआती परामर्श से हमें यह समझने में काफी मदद मिली कि आंतरिक अक्षमता, प्रौद्योगिकीय कमी, स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं के अभाव और बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था के कारण उन्नत ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकियों के उत्पादन की लागत 15 प्रतिशत बढ़ जाती है। इसलिएए मंत्रालय ने ऐसी योजना बनाई है जिससे पात्र कंपनियां 18 प्रतिशत तक प्रोत्साहन प्राप्त कर सकती हैं ।

इस नीति को लागू करने के बाद मैंने केंद्र सरकार, राज्य सरकारों के अधिकारियों, नीति आयोग और ऑटो क्षेत्र के प्रमुख उद्योगपतियों के साथ गोवा में एक सत्र का आयोजन किया था। सत्र के दौरान उद्योग से प्राप्त प्रशंसा और सराहना असाधारण रूप से उत्साहजनक थी जिससे हमें विश्वास हुआ कि हम अपने वादों को पूरा करने में कामयाब हुए हैं और ऑटो उद्योग इस नीति से बहुत लाभान्वित होगा। इस योजना के तहत रिकॉर्ड 115 आवेदन प्राप्त हुए जो इस योजना को मिली अभूतपूर्व सफलता की एक और पहचान है।

ऑटो पीएलआई स्कीम के तहत दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि पर सरकार का खर्च 25,938 करोड़ रूपए आएगा। लेकिन इससे इस उद्योग में नए निवेश के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। रोज़गार के अतिरिक्त अवसर पैदा होंगे, सो अलग। इससे ऑटोमोबाइल उद्योग को उच्चतर उत्पादों की मूल्य श्रृंखला में शामिल होने की प्रेरणा मिलेगी और हम ग्लास्गो शिखर सम्मेलन में हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा की गई प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने की ओर बढ़ सकेंगे।

हमने हाल ही में उन 20 आवेदकों की सूची जारी की है जिन्हें ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट उद्योग के लिए पीएलआई योजना की चैम्पियन ओईएम (मूल उपकरण निर्माता) स्कीम के तहत लाभ दिया जाना है। इस योजना पर 45,016 करोड़ रुपये का खर्च आने का अनुमान है। जिन ओईएम को चैम्पियन माना गया है, उनमें से 10 ओईएम यात्री वाहन निर्माता हैं और व्यावसायिक वाहन बना रहे हैं। इनमें चार ऐसे ओईएम भी हैं जो दुपहिए और तिपहिए वाहन बना रहे हैं जबकि 6 ओईएम ऐसे हैं जो गैर.ऑटोमोटिव निवेशक हैं। हमारा मंत्रालय अब 'चैंपियन कंपोनेंट प्रोत्साहन योजना' के तहत प्रोत्साहन पाने वालों की सूची को अंतिम रूप दे रहा है। हम इसे जल्दी ही जारी करेंगे। ऑटो उद्योग इस समय अभूतपूर्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है और सरकार ऐसी नीतियों और योजनाओं पर काम करने के प्रति कटिबद्ध है जिनसे इस उद्योग के लिए इन परिवर्तनों को अपनाना सहज हो सके। सरकार को भरोसा है कि ऑटो उद्योग इन नीतियों का सर्वोत्तम उपयोग करेगा और हम ऑटो विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, ऑटो विनिर्माण एवं तकनीक में प्रगतिशीलता और जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने के तीन महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

कोरोना के खिलाफ लगातार मजबूत होता सुरक्षा कवच

चंद्रकांत लहारिया, जन नीति और स्वास्थ्य तंत्र विशेषज्ञ

पिछले दिनों 12 से 18 आयु-वर्ग की आबादी के लिए कॉर्बेवैक्स टीके को आपात इस्तेमाल के लिए मंजूर किया गया है। वयस्कों पर इस टीके के इस्तेमाल की मंजूरी पिछले दिसंबर में दे दी गई थी। कॉर्बेवैक्स एक प्रोटीन-आधारित टीका है, जो अन्य उपलब्ध टीकों से अलग है और एक अच्छे बूस्टर का काम कर सकता है। वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि वायरल वेक्टर वैक्सीन (जैसे कोविशील्ड) का बूस्टर देने पर एंटीबॉडी औसतन तीन गुना तक बढ़ जाती है, जबकि प्रोटीन आधारित टीके की बूस्टर खुराक देने से औसतन आठ गुना तक। सबसे बेहतर बूस्टर मैसेंजर आरएनए आधारित टीके (मॉडर्ना या फाइजर बायोटेक टीके) के माने जाते हैं, जिसकी खुराक 24 गुना तक एंटीबॉडी बढ़ा देती है। पर मैसेंजर आरएनए आधारित टीके भारत में उपलब्ध नहीं हैं, ऐसे में, कॉर्बेवैक्स की उपलब्धता के बाद इसको अपने यहां बूस्टर के तौर पर इस्तेमाल का निर्णय संभव है।

फिलहाल भारत में 95 फीसदी से अधिक वयस्क आबादी को कोविड के टीके की कम से कम एक खुराक लग चुकी है और 80 प्रतिशत से अधिक आबादी को दोनों खुराक।

यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है, खासतौर से तब, जब वयस्क आबादी के लिए इतने बड़े स्तर पर टीकाकरण पहली बार हो रहा है, जो पूरी तरह से ऐच्छिक भी है। उम्मीद है, आने वाले हफ्तों में हम 90 फीसदी आबादी के पूर्ण टीकाकरण के करीब पहुंच जाएं। पूर्ण टीकाकरण का फायदा आने वाले महीनों में भी मिलेगा, क्योंकि वैज्ञानिक अध्ययनों में साबित हो चुका है कि कोविड-19 के टीके लंबे समय तक गंभीर बीमारी से बचाते रहते हैं, बेशक एंटीबॉडी का स्तर कम हो जाए। अध्ययन यह भी बताते हैं कि प्राकृतिक तौर पर संक्रमित होने के बावजूद दोबारा संक्रमित होने की आशंका बनी रहती है, लेकिन अगर टीकाकरण किया हुआ हो, तो व्यक्ति को कोरोना की गंभीर बीमारी का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है।

अहम बात यह भी है कि भारत में 'सैंडविच इम्यूनिटी' जैसी स्थिति बन गई है, जो दुनिया में सबसे अलग है। यह 'हाईब्रिड इम्यूनिटी' (प्राकृतिक संक्रमण के साथ-साथ टीके की खुराक लगना) से आगे की स्थिति है। असल में, अपने यहां डेल्टा वेरिएंट की वजह से करीब 70 फीसदी आबादी को प्राकृतिक संक्रमण हुआ। इसके साथ-साथ टीकाकरण भी चलता रहा, जिसमें अब हर पांच में से चार भारतीय को दोनों खुराक लग गई हैं। इसके बाद ओमीक्रोन के कारण 60-70 फीसदी आबादी को सुरक्षा मिल गई। यह 'सैंडविच इम्यूनिटी' एक अच्छा सुरक्षा कवच है। दक्षिण अफ्रीका से आए कुछ शोध-नतीजे बताते हैं कि ओमीक्रोन से संक्रमित व्यक्तियों में 14 गुना तक एंटीबॉडी बढ़ जाती है, जो भविष्य में होने वाले संक्रमण से कुछ समय के लिए बचाती भी है। यही वजह है कि ओमीक्रोन के स्वरूप बीए.2 से हमें घबराने की जरूरत नहीं है। यह नया वेरिएंट नहीं है, बल्कि ओमीक्रोन के तीन स्वरूपों में एक है। वैसे भी, भारत में ओमीक्रोन का बीए.1 और बीए.2 स्वरूप समान रूप से लोगों को संक्रमित कर चुका है।

अब आगे की हमारी रणनीति क्या हो? निश्चय ही, अब भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो टीका लेने से बच रहे हैं। लिहाजा, पूर्ण टीकाकरण और उच्च जोखिम वाली आबादी की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता में होनी चाहिए। जो बूस्टर डोज के लिए पात्र हैं, उन्हें तीसरी खुराक लगवानी चाहिए। भारत में कोविड-19 टीकाकरण की उच्च दर एक नई शुरुआत को जन्म दे सकती है। उदाहरण के तौर पर, यूं तो भारत में बच्चों का नियमित टीकाकरण करीब 45 साल से चलता आ रहा है, लेकिन उनका संपूर्ण टीकाकरण कभी भी 80 फीसदी से ऊपर नहीं गया है, जबकि नजदीकी पड़ोसी देशों में यह संख्या 95 फीसदी के करीब है। इससे हमें सबक लेना चाहिए और हर बच्चे के टीकाकरण को मजबूत करने की शुरुआत करनी होगी। फिर, कुछ अभिभावक छोटे बच्चों के टीकाकरण के इंतजार में हैं। संभव है, 12 से 14 साल के पहले से किसी बीमारी से प्रभावित बच्चों का टीकाकरण कुछ सप्ताह अथवा महीनों में शुरू हो जाए, लेकिन 12 साल से छोटे बच्चों को कोविड वायरस से गंभीर बीमार होने का खतरा नगण्य है, इसलिए इस आयु वर्ग के टीकाकरण की फिलहाल जरूरत नजर नहीं आती।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

श्रीमती अंजली जैन की कलम से...

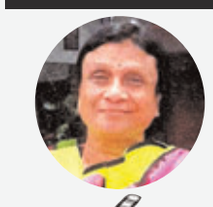

बिन बोले बन कहे
उनको हमारी मौन भी
सजा लगता है, उनके
कर्कश-बाणों को भी
हम फूलों की तरह से
दिल में सजा लेते हैं।

-अंजली जैन
7024460938

विनय मेडिकल स्टोर्स
सभी प्रकार के अंग्रेजी और आयुर्वेदिक दवाी के चिल्हर विक्रेता
मो.-9329766891
शॉप नं.-15, महात्मा गांधी मार्केट, अग्रेसन चौक, दुर्ग (छ.ग.)

स्टेशन रोड, इंदिरा मार्केट, दुर्ग के प्रतिष्ठित संस्थान विज्ञापन के लिए संपर्क करे
9827806026, 7869620239

श्री सांई शूज कलेक्शन
जूते, चप्पल एवं पंजाबी जूती की विशाल श्रृंखला
Roshi 9302834546
मेनोनाईट चर्च के सामने, जी.ई. रोड. दुर्ग (छ.ग.)

डिम्पी ज्वेलर्स
सजेश भोरकर 9907157053
राकेश भोरकर 9302830835
आजाद चौक, कसारीडीह, दुर्ग (छ.ग.)

स्थानांतरण
लक्ष्मी ज्वेलर्स
कुशल भैय्या
9770584111
8959994444
स्टेशन रोड, कर्नाटका बैंक के सामने, दुर्ग (छ.ग.)

NJ
सोने, चांदी के जेवर के विक्रेता
सांखला नवीन ज्वेलर्स
जवाहर चौक, दुर्ग

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
राजहंस राजस्थानी थाली रेस्टोरेन्ट
शुद्ध शाकाहारी भोजन की व्यवस्था
पार्सल की सुविधा उपलब्ध
भागीरथ पंचारिया मो.- 9893302026
हरित जोशी मो.- 7000515894
होटल न्यू इंडिया के नीचे, पोलसाय पारा चौक, दुर्ग (छ.ग.)

With Best Service and Quality Since Last 28 Years
कृष्णा ऑप्टिकल्स
आँखों की निःशुल्क जांच की जाती है
तुरंत चश्मा प्राप्त करें
krishnaopticalsdurg.com ahujav67@gmail.com krishna_opticals_1993 krishnaoptical'sdurg
नये बस स्टैण्ड के सामने, सौभग्य कॉम्पलेक्स, दुर्ग 98279 53331
मातोश्री काम्पलेक्स, महाराजा चौक, दुर्ग 93031 07850

सुशील म्युजिकल
इलेक्ट्रीक शाही बेन्जो के निर्माता
सभी प्रकार के संगीत वाद्य यंत्र के विक्रेता
स्टेशन रोड, फरिश्ता काम्पलेक्स के पास
दुर्ग (छ.ग.) - 491001
मो.-9993626855, फो.-07884010027
e-mail-sushilmusical@gmail.com

गंजेपन से मुक्ति मात्र 1 घंटे में
COMPLETE FAMILY SALON
हेयर रिप्लेसमेंट, 100% संतुष्टि की गारंटी
पहले बाद में
JITU'Z
CUT N SHINE
93009-11331
रंगोली बेंगल्स के सामने, जयसवाल इलेक्ट्रानिक के बाजू में इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्ग (छ.ग.)

श्रीकंचनपथ
छत्तीसगढ़

इनकम TAX
ITR फाईल
बनवायें मात्र 500/- में
TDS, GST, TAX Expert
सम्पर्क- शेखर गुप्ता
9300755544
onlytds@gmail.com
WWW.ONLYTDS.COM

खास खबर

बोर्ड परीक्षा के लिए हेल्पलाईन से विद्यार्थियों की समस्याओं का हो रहा त्वरित समाधान

रायपुर। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षा के लिए स्थापित हेल्पलाईन टोल फ्री नम्बर 18002334363 पर विद्यार्थियों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। आज 24 फरवरी को 147 फोन कॉल हेल्पलाईन टोल फ्री नम्बर पर आयें, जिसका समाधान किया गया। इस टोल फ्री नम्बर पर प्रात: 10.30 से 5.00 बजे तक विद्यार्थी, पालक, शिक्षक अपनी समस्या बताकर समाधान प्राप्त कर सकते है। छत्तीसगढ़ राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों, जशपुर, कोरबा, बस्तर, नारायणपुर, कवर्धा एवं अन्य जिलों से भी विद्यार्थी प्रश्न पूछ रहे हैं। पालकों एवं शिक्षकों, सहायक केन्द्राधिकारी, केन्द्राधिकारी भी परीक्षा प्रवेश-पत्र आदि समस्याओं पर लगातार कॉल कर रहे है। अत: हेल्पलाईन सही मायने में परीक्षा के लिये हेल्पफुल साबित हो रही है। हेल्पलाईन में आज मनोचिकित्सक डॉ. सोनिया परियल द्वारा तनाव संबंधित समस्याओं का निराकरण किया गया।

राष्ट्रीय मतदाता जागरूकता प्रतियोगिता का आयोजन 15 मार्च तक

रायपुर। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ रायपुर के पत्र के परिपालन में कलेक्टर सौरभ कुमार ने अधिकारियों को राष्ट्रीय मतदाता जागरूकता प्रतियोगिता के प्रचार प्रसार के संबंध में निर्देशित किया है। कलेक्टर द्वारा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत रायपुर एवं नोडल अधिकारी (स्वीप) तथा सर्व निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को इस संबंध में पत्र लिखकर निर्देशित किया जा चुका है। कलेक्टर ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रत्येक मत के महत्व को रचनात्मकता के माध्यम से प्रदर्शित करने हेतु देश के समस्त नागरिकों के लिए मतदाता जागरुता पर आधारित शीर्षक पर राष्ट्रीय जागरूकता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

उच्च शिक्षामंत्री पटेल ने 1.35 करोड़ रुपये से अधिक के कार्यों का किया लोकार्पण व भूमिपूजन

शासन की योजनाओं से किसानों को मिल रही फसलों की बेहतर कीमतें-उमेश पटेल

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। उच्च शिक्षामंत्री श्री उमेश पटेल आज खरसिया विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों में 01 करोड़ 35 लाख 6 हजार रुपये के कार्यों का लोकार्पण व भूमिपूजन किया। उच्च शिक्षा मंत्री श्री उमेश पटेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ की करीब 80 प्रतिशत आबादी गांवों में बसती है। अधिकांश लोग कृषि कार्यों से जुड़े हैं। जिसे देखते हुए सरकार ने ऐसे कदम उठाए हैं जिससे खेती-किसानी को मजबूती मिली है। विभिन्न फसलों को समर्थन मूल्य में क्रय करने के साथ ही राजीव गांधी किसान न्याय योजना से आदान सहायता दी जा रही है। इसमें धान के साथ दलहन-तिलहन और उद्यानिकी फसलों को भी शामिल किया है।

जिससे किसानों को उनकी फसलों का बेहतर दाम मिल रहा है। वनवासी परिवारों के आजीविका का प्रमुख साधन वनोपज संग्रहण को भी विस्तार दिया गया। समर्थन मूल्य में खरीदे जाने वाले वनोपजों की संख्या बढ़ायी गयी है। अब 61 वनोपजों की समर्थन मूल्य में खरीदी की जा रही है। कीमतों में भी वृद्धि की गयी है। तेंदूपत्ता मानक बोरे की कीमतों में 60 प्रतिशत की वृद्धि कर 25 सौ रुपये से 4 हजार रुपये कर दिया गया, जिससे संग्राहक परिवारों को ज्यादा आर्थिक लाभ मिले। उन्होंने कहा कि शासन ने भूमिहीन मजदूरों के लिए भी योजना शुरू की है। बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए आत्मानंद स्कूल खोले गए हैं। ग्रामीण इलाकों में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति हेतु घरेलू नल कनेक्शन विस्तार का भी तेजी से किया जा रहा है। बिजली बिल हाफ योजना का लाभ भी ग्रामीण घरेलू उपभोक्ताओं को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि शासन प्राथमिकता से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रही है।

उच्च शिक्षामंत्री श्री पटेल आज खरसिया विकासखण्ड के पुरैना, चारपारा, छोटे बोरदी, बड़े बोरदी, बड़े देवंगाव गांव में पहुंचे। उन्होंने कहा कि जनसंपर्क के माध्यम से नागरिकों से सीधा संवाद होता है। जिससे उनकी मांग और समस्याओं को जानने का मौका मिलता है। इससे आगे होने वाले विकास कार्यों की रूपरेखा बनाने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण आवश्यकताओं के आधार पर अधोसंरचना विकास के कार्य किए जायेंगे। इस दौरान ग्रामवासियों ने उन्हें अपनी समस्याओं से अवगत कराया जिसका उन्होंने जल्द उसका निराकरण करने के निर्देश एसडीएम, जनपद सीईओ सहित सभी संबंधित अधिकारियों को दिए।

इस मौके पर अध्यक्ष जनपद पंचायत खरसिया श्री महेत्तर उरांव, सदस्य जिला पंचायत श्रीमती पूर्णिमा जायसवाल, सदस्य जनपद पंचायत श्री अमरनाथ भारद्वाज, सरपंच पुरेना श्रीमती श्याम बाई गोंड, सरपंच बड़े देवगांव श्रीमती संध्या रोहित मिरी, उप सरपंच श्री तीजराम खण्डेलवाल, श्री मनोज गबेल, श्री अभय महंती सहित जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

इन कार्यों का हुआ लोकार्पण व भूमिपूजन- ग्राम पुरेना में 3 लाख रुपये की लागत से सांस्कृतिक मंच निर्माण, 01 लाख रुपये की लागत से पचरी निर्माण, गाड़ाबोरदी में 02 लाख रुपये की लागत से 2 पचरी निर्माण, 3 लाख 60 हजार रुपये की लागत से 3 बोर खनन एवं पंप स्थापना, 20 लाख रुपये की लागत से दो सीसी रोड निर्माण, 3 लाख 50 हजार रुपये की लागत से सामुदायिक शौचालय, 2 लाख रुपये की लागत से चबुतरा निर्माण, ग्राम बड़े देवगांव में 9 लाख रुपये की लागत से अहाता निर्माण, 6 लाख 50 हजार रुपये की लागत से आंगनबाड़ी भवन, डेढ़ लाख रुपये की लागत से चबुतरा निर्माण, 2 लाख 50 हजार रुपये की लागत से मुक्तिधाम निर्माण, 2 लाख रुपये की लागत से पचरी निर्माण, 2 लाख रुपये की लागत से जिम स्थापना, 16 लाख रुपये की लागत से सीसी रोड निर्माण, 5 लाख रूपये की लागत से सीसी रोड सह नाली निर्माण, 01 लाख रुपये की लागत से अहाता निर्माण, 01 लाख रुपये की लागत से हाट-बाजार क्लीनिक शेड निर्माण, 2 लाख 50 हजार रुपये की लागत से यात्री प्रतिक्षालय निर्माण, 2 लाख रुपये की लागत से नाली निर्माण, डेढ़ लाख रुपये की लागत से पचरी निर्माण एवं 48 लाख रुपये की लागत से पानी टंकी निर्माण कार्य शामिल है।

राज्य एवं जिला नोडल अधिकारियों की एक दिवसीय प्रशिक्षण सह-कार्यशाला संपन्न

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार के समाज कल्याण विभाग द्वारा व्यसन मुक्ति अभियान के तहत राज्य एवं जिला स्तरीय नोडल अधिकारियों की एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला राज्य अनुसंधान एवं पुनर्वास केंद्र माना में संपन्न हुई। कार्यशाला में विशेषज्ञों ने बताया कि राज्य सरकार छत्तीसगढ़ के लोगों को नशे से दूर करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

इसलिए भारत माता वाहिनी योजना अंतर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत और आश्रित गांवों में ऐसा माहौल तैयार किया जाएगा कि नशा करने वालों कि मन: स्थिति में बदलाव आए और वे नशा करने की लत छोड़ने विवश हो जाएं। यह सब सामूहिक प्रयत्न से ही संभव हो पाएगा।

कार्यशाला में विशेषज्ञों ने बताया नशा-पान का सेवन मानव समाज के लिए घातक साबित हो रहा है। व्यसन के कारण ही कैंसर, अस्थमा, हृदयाघात, उच्च रक्तचाप जैसे गंभीर व्याधि शरीर में उत्पन्न होती है। साथ ही परिवार मे कलह, आर्थिक समस्याएं, सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट, नशा के दुष्परिणाम है। इससे हम जितना जल्दी मुक्त होंगे हमारा समाज विकास के मार्ग पर उतनी ही अधिक तेजी से आगे बढ़ेगा।

भारत माता वाहिनी में प्रत्येक ग्राम पंचायत एवं आश्रित ग्राम में 8 सदस्यों का समूह होगा जिसमें महिला अध्यक्ष होंगी। समूह में अधिकतम 3 पुरुष सदस्य भी हो सकते हैं। सदस्यों में दिव्यांग व्यक्तियों, विधवा, परित्यक्ता, महिला, तृतीय लिंग समूह के व्यक्ति, नशा मुक्त हुए व्यक्तियों को प्राथमिकता से शामिल किया जाएगा। ग्राम सभा के अनुमोदन उपरांत समाज कल्याण विभाग के जिला कार्यालय में पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत करना होगा। प्रथम चरण में प्रत्येक जनपद पंचायत की 10 ग्राम पंचायतों में भारत माता वाहिनी का गठन किया जाएगा। इसके लिए 2000 या अधिक की जनसंख्या वाले गांवों का चयन किया जाएगा। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों द्वारा बताया गया कि स्थानीय स्तर पर प्रचार प्रसार के लिए रैली, प्रभात फेरी, नशापान के दुष्परिणामों का प्रचार-प्रसार, दीवार लेखन, अवैध शराब के कार्य में लिप्त व्यक्तियों एवं नशा पीड़ितों को समझाने के बाद भी नहीं मानने पर उनके घर के सामने उस क्षेत्र के पुलिस थाना को सूचित करते हुए सविनय भजन कीर्तन का कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से किया जाएगा।

जशपुर, बलौदाबाजार, दंतेवाड़ा और जांजगीर में वायरोलॉजी लैब के लिए आईसीआईसीआई फाउंडेशन ने प्रदान की मशीनें

कोरोना से निपटने संसाधन जुटाने में आईसीआईसीआई फाउंडेशन शासन का लगातार कर रहा है सहयोग - टीएस सिंहदेव

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। कोरोना से निपटने संसाधन जुटाने में आईसीआईसीआई फाउंडेशन शासन का लगातार कर रहा है सहयोग – टी.एस. सिंहदेव स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भी बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के लिए लगातार हर तरह के संसाधन बढ़ाएं जा रहे। प्रदेश के चार जिला मुख्यालयों में वायरोलॉजी लैब की स्थापना में आईसीआईसीआई फाउंडेशन सहयोग कर रहा है। स्वास्थ्य मंत्री टी.एस. सिंहदेव के सिविल लाइन स्थित निवास कार्यालय में आज फाउंडेशन द्वारा वायरोलॉजी लैब के लिए स्वास्थ्य विभाग को मशीनें प्रदान की गईं।

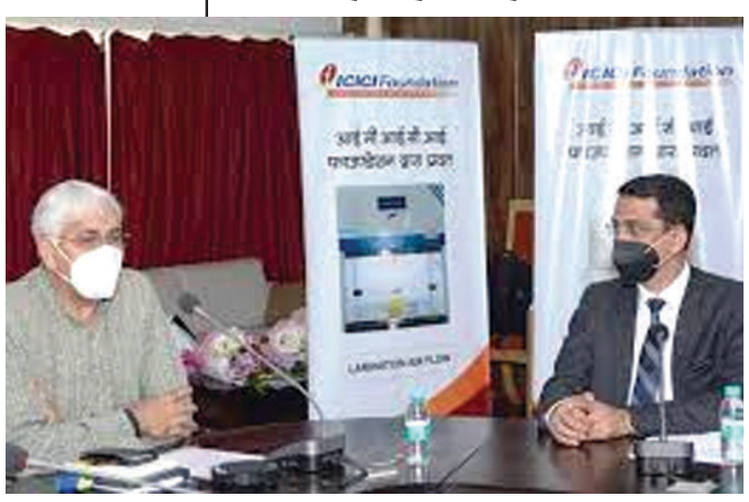

आईसीआईसीआई फाउंडेशन द्वारा सीएसआर के तहत कुल एक करोड़ रूपए लागत की तीन आरटीपीसीआर मशीनें, तीन ऑटोमेटेड आरएनए एक्सट्रैक्शन मशीनें (Automated RNA E&traction Machine) और एक लेमिनार एयर फ्लो मशीन (Laminar Air Flow Machine) उपलब्ध कराई जा रही है। ये मशीनें रायपुर मेडिकल कॉलेज के वायरोलॉजी लैब सहित जशपुर, बलौदाबाजार, जांजगीर और दंतेवाड़ा में नए स्थापित हो रहे लैबों में स्थापित की जाएंगी।

स्वास्थ्य मंत्री टी.एस. सिंहदेव ने इस सहयोग के लिए आईसीआईसीआई फाउंडेशन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कोरोना के विरूद्ध लड़ाई में आईसीआईसीआई बैंक शुरूआत से ही राज्य शासन का सहयोग कर रहा है। इससे पहले भी उनके द्वारा कोविड अस्पतालों में आईसीयू बिस्तर, ऑक्सीजन एक्सट्रेक्टर, डाइलिसिस मशीनें व अन्य संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं। कोरोना काल में आईसीआईसीआई फाउंडेशन और बैंक द्वारा करीब छह करोड़ रूपए के संसाधन मुहैया कराए गए हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के कारण पूरी दुनिया में स्वास्थ्य सेवाओं की अधोसंरचना बदल रही है। इस वैश्विक महामारी के कारण स्वास्थ्य क्षेत्र की व्यवस्थाओं में बहुत कम समय में ही बड़े बदलाव हुए हैं।

स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भी बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के लिए लगातार हर तरह के संसाधन बढ़ाएं जा रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं की मजबूती के लिए आगे भी आईसीआईसीआई फाउंडेशन द्वारा सहयोग मिलता रहेगा। स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख सचिव डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी, स्वास्थ्य सेवाओं के संचालक नीरज बंसोड़ और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की संचालक डॉ. प्रियंका शुक्ला कार्यक्रम में ऑनलाइन शामिल हुए। इस दौरान वायरोलॉजी लैब के राज्य नोडल अधिकारी डॉ. कमलेश जैन और आईसीआईसीआई बैंक के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

87 नर्तक दलों ने पारम्परिक वेशभूषा और वाद्य यंत्रों के साथ दी प्रस्तुति

श्रीकंचनपथ न्यूज

विलुप्त होते कोकरेंग नृत्य को दर्शकों की मिली प्रशंसा

नारायणपुर। माता मावली मेला के शुरूआती दिन बुधवार को स्थानीय 87 आदिवासी लोकनर्तक दलों ने अपनी लोककला और संस्कृति की छठा बिखेरी। नर्तक दलों ने विभिन्न पारम्परिक वेशभूषा में अपनी स्थानीय भाषा, शैली, बोली और परम्परागत वाद्य यंत्रों की मनमोहक थाप से लोगों को मनमोहित किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मांदरी, नृत्य, कुरमांदरी, कोलंग, मांदरी नाच, गेड़ी नृत्य, नाच, तुड़बुड़ी नाच, ककसाड़ नृत्य सहित अन्य नृत्यों का शानदार प्रदर्शन हुआ। विलुप्त होते कोगरेंग नृत्य की प्रस्तुति को देख दर्शकों ने खूब प्रशंसा मिली और दर्शकों ने तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया।

सांस्कृतिक कार्यकम में जिला पंचायत उपाध्यक्ष देवनाथ उसेण्डी, जनपद पंचायत नारायणपुर अध्यक्ष पंडीराम वड्डे, डिप्टी कलेक्टर प्रदीप वैद्य, रामसिंग सोरी, कार्यक्रम अधिकारी महिलाा एवं बाल विकास विभाग रविकांत ध्रुर्वे जिला कोषाालय अधिकारी प्रशांत खापर्डे, जिला शिक्षा अधिकारी जी.आर. मंडावी सहित क्षेत्र के जनप्रतिनिधी, बड़ी संख्या में दर्शकगण उपस्थित थे। अतिथियों ने देर रात तक नर्तक दलों की प्रस्तुतियां देखी और उन्हें पुरस्कृत किया।

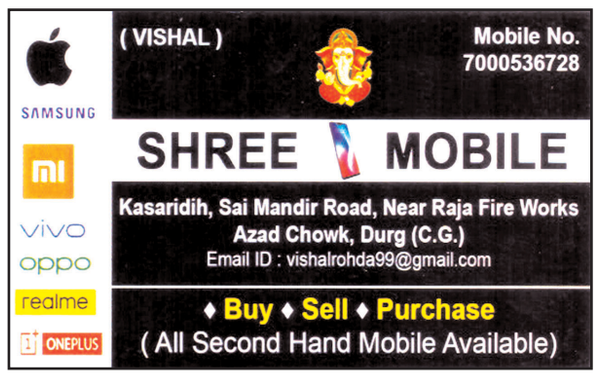

खास खबर

स्कूलों और शैक्षणिक संस्थाओं में ग्रीष्म अवकाश में बदलाव का शिक्षकों ने किया स्वागत

रायपुर। स्कूलों और शैक्षणिक संस्थाओं में गर्मी की छुट्टी के दिनों में किए गए बदलाव का शिक्षकों ने स्वागत किया है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा गर्मी के दिनों में आगामी शैक्षणिक सत्र 01 मई से 15 दिन के अतिरिक्त शैक्षणिक कार्य के लिए प्रारंभ किया जाएगा। दरअसल कोरोना संकटकाल में स्कूलों की पढ़ाई काफी प्रभावित रही है, इसे देखते हुए छात्रों के व्यापक हित को देखते हुए ग्रीष्मकालीन अवकाश में बदलाव किया गया है। सभी शिक्षकों को कोरोना संकटकाल के दौरान जिन विद्यार्थियों की लर्निंग आऊट कम रही है। उन बच्चों को बढ़े हुए शैक्षणिक सत्र में विशेष ध्यान देने के निर्देश शिक्षा विभाग द्वारा दिए गए हैं। ग्रीष्मकालीन अवकाश में न केवल बदलाव की गई है, बल्कि शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षण सत्र को बढ़ाया गया है, जिससे कोरोना संकटकाल में छात्रों की पढ़ाई में हुई कमी की भरपाई हो सके। चांपा-जांजगीर जिले के शिक्षक राजेश कुमार सूर्यवंशी का कहना है कि कोरोना संकटकाल में कई बच्चे पढ़ाई-लिखाई की मुख्यधारा से दूर हो चुके थे, उन्हें फिर से मुख्यधारा में लाने में शिक्षा विभाग के द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में बदलाव से काफी लाभ होगा। जिला बालोद की शिक्षिका कुमारी भगवती ठाकुर का कहना है कि इससे बच्चों के शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में मदद मिलेगी। बेमेतरा जिले के शिक्षक आनंद कुमार ताम्रकर का मानना है कि 15 दिन के अतिरिक्त शैक्षणिक कार्य से बच्चों से सीधे संवाद करने का समय मिलेगा। इन दिनों का उपयोग बच्चों में शैक्षणिक अभिरूचि जागृत करने के लिए प्रयास किया जाएगा।

कांकेर जिले की शिक्षिका ममता सोनी ने स्कूल शिक्षा विभाग के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि ऑनलाईन शिक्षण के कारण बच्चों में पढ़ाई के प्रति आई कमियों को दूर करने के लिए प्रयास किया जाएगा। कोरबा जिले के शिक्षक शांतिलाल कश्यप का मानना है कि इस बढ़े हुए समय में बच्चों को अगली कक्षाओं के लिए तैयारी कराई जाएगी। बलौदाबाजार-भाठापारा जिले के शिक्षक कान्हा साहू का कहना है कि बढ़े हुए दिनों में बच्चों को गणित का भय दूर करने के लिए विशेष प्रयास करेंगे। जांजगीर-चांपा जिले के शिक्षक मणिशंकर साहू का कहना है कि इस अवधि में शिक्षकों और बच्चों के बीच दूरियों को कम करने में मदद मिलेगी।

छत्तीसगढ़ के शासकीय अस्पतालों में सप्लाई दवाओं के सैंपल सेंट्रल लैब में फेल

रायपुर (ए)। प्रदेश के शासकीय अस्पतालों में छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विसेस कारपोरेशन (सीजीएमएससी) की तरफ से भेजा गया घटिया पोविडोन आयोडीन दवा का सैंपल सेंट्रल लेबोरेटरी कोलकाता में भी फेल हो चुका है। रिपोर्ट में राजफाश हुआ है कि सीजीएमएससी के अधिकारियों द्वारा मिलीभगत व भ्रष्टाचार से दवाएं बिना जांच के ही अस्पतालों में सप्लाई की गई थी। लेकिन विडंबना है कि लाखों मरीजों की जान से खेलने वालों पर अब भी कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

बता दें कि अस्पतालों से पोविडोन आयोडीन (एंटीसेप्टिक दवा) के गुणवत्ता को लेकर लगातार शिकायत मिलने पर औषधि विभाग ने आंबेडकर अस्पताल से सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा था। 26 फरवरी 2021 को आई रिपोर्ट में पता चला कि उसमें मूल दवा का कोई तत्व ही नहीं है यानी पूरी तरह से अमानक है। आनन-फानन में शासन स्तर पर पत्र जारी कर सभी सरकारी अस्पतालों से दवाओं के भेजे गए खेप को वापस मंगाया गया।

मानवाधिकार आयोग ने मांगा जवाब

विभागीय जांच में सामने आया कि सीजीएमएसी द्वारा हिमाचल प्रदेश के नालगढ़ स्थित एल्विस हेल्थ केयर कंपनी से टेंडर कर करोड़ों रुपये की दवा खरीदी की गई थी। दवा खरीदी से पहले उसके गुणवत्ता की जांच की जाती है, जो नहीं की गई। औषधि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि मामले में रिपोर्ट आने के बाद एजेंसी के खिलाफ कार्रवाई की प्रक्रिया चल रही है। चूंकि, सीजीएमएससी शासकीय संस्थान है इसलिए औषधि विभाग इसमें हाथ डालने से बच रहा है।

राजिम माघी पुन्नी मेला में राज्यपाल उइके ने सरस मेले का लिया भरपूर आनंद

खुमरी पहनकर सेल्फी ली, चॉक घुमाया, तुरही बजाई, सरस मेले में लगे स्टॉलों का अवलोकन किया

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राजिम माघी पुन्नी मेला में संत समागम शुभारंभ की मुख्य अतिथि राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके ने सरस मेले का भरपूर आनंद लिया और विभिन्न स्टालों में जाकर स्वसहायता समूह की महिलाओं एवं स्थानीय कलाकारों से सहजता एवं आत्मीयता के साथ बात की। उन्होंने स्टॉल में लगे विभिन्न उत्पादों के संबंध में विस्तार से जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य की परम्परागत खुमरी पहनकर फोटो भी खिंचवाई। माटीकला के स्टॉल में चॉक घुमाकर कलश बनाने में हाथ अजमाया। साथ ही बस्तर के सुप्रसिद्ध वाद्य यंत्र तुरही का वादन कर आनंद लिया। सुश्री उईके ने ग्राम नारी के कुम्हार युगल किशोर चक्रधारी द्वारा बनाये जा रहे मिट्टी के कलश देखकर बहुत ही उत्सुकता पूर्वक अपने हाथों से चॉक घुमाकर देखा। उन्होंने चक्रधारी से चर्चा कर विक्रय के संबंध में जानकारी ली। चक्रधारी ने बताया कि कोरोना काल में लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर हो गई थी। ऐसे में लोगों को हाथों से बनी सामग्री को अधिक से अधिक खरीदना चाहिए जिससे कुम्हारों को भी रोजगार मिल सकेगा। इससे स्वदेशी वस्तुओं का भी प्रचार होगा और हमारे शिल्पियों को भी रोजगार मिलेगा। राज्यपाल ने रेशम के स्टॉल में कोसा से बने वस्त्रों की खूब सराहना की। ग्राम पारागांव की कारीगर सोनकुंवर देवांगन द्वारा बुनी जा रही चादर का अवलोकन किया। कारीगरों से चर्चा करते हुए साड़ी बनाने में आने वाली लागत और बाजार उपलब्धता के बारे में जानकारी ली। हथकरघा स्टॉल में सुश्री उईके को शॉल भेंट किया गया। सरस मेला में संगवारी सेल्फी जोन में राज्यपाल ने खुमरी पहनकर सेल्फी ली।

छत्तीसगढ़ के अमनज्योति को मिलेगा राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार

भारतीय बाल कल्याण परिषद ने की घोषणा

मुख्यमंत्री बघेल और महिला एवं बाल विकास मंत्री भेंड़िया ने दी बधाई

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ के अमनज्योति जाहिरे को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार वर्ष 2021 प्रदान किया जाएगा। भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली ने कोरबा जिला निवासी अमन ज्योति का चयन इस पुरस्कार के लिए किया है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और महिला एवं बाल विकास मंत्री अनिला भेंड़िया ने साहसी अमनज्योति का चयन राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए होने पर उसे बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

उल्लेखनीय है कि साहसिक कार्यों और बहादुरी के लिए बच्चों को नगद राशि सहित प्रमाण पत्र के साथ भारतीय बाल कल्याण परिषद द्वारा हर साल यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। कोविड परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करने की तिथि की घोषणा बाद में की जाएगी।

मिल चुका है राज्य बाल वीरता पुरस्कार

अमनज्योति को उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्यों के लिए हाल ही में छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा राज्य वीरता पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। राज्यपाल सुश्री अनसुईया उईके द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर रायपुर में आयोजित मुख्य समारोह और राजभवन में बहादुर बच्चों को सम्मानित किया गया था।

जान पर खेल बचाई थी युवक की जान

कोरबा के रहने वाले 15 वर्षीय अमन ज्योति ने अपने से उम्र में बड़े एक छात्र की जान बचाई थी। एक अगस्त 2021 को फ्रेंडशिप डे के दिन कुछ छात्र कोरबा शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर पिकनिक स्पॉट परसखोला बांध गए थे। इनमें से झरना में हाथ-पैर धोने गए एक छात्र आशीष ठाकुर का पैर फिसल गया था। फिसल कर गिरने के कारण वह पानी में बहने लगा था। खतरनाक फिसलन वाली चट्टान और पानी की तेज धार में आशीष को बहते देख सभी मित्र घबरा गए क्योंकि उन्हें तैरना नहीं आता था। इस बीच आसपास के लोग और मित्र छात्र बहते हुए आशीष को पानी से बाहर निकालने के लिए जोर जोर से बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगे। पानी में बह रहे छात्र के लिए जब कोई नहीं पहुचा तो अमनज्योति ने अपनी जान की परवाह न करते हुए पानी में छलांग लगा दी और चट्टानों में फिसलते हुए छात्र को रोक लिया। उसने अपनी सूझबूझ से किसी तरह बहते हुए छात्र को किनारे पर लाया। इसके बाद वह दोस्तों की मदद से बेहोश घायल छात्र को अस्पताल भी लेकर गया। छात्र जहां पानी में बह रहा था वहां आगे बड़ी खाई थी। यदि अमनज्योति पानी में छलांग लगाकर बहते हुए छात्र को नहीं रोकता तो बहता हुआ छात्र खाई में गिर सकता था। अमनज्योति को भी तैरना नहीं आता था। अचानक से युवक को बचाने के लिए नदी में कूद जाने से उसके हाथों और छाती सहित शरीर में गहरी चोट भी लगी थी। अमन के सूझ-बूझ और साहस से उसके मित्र आशीष की जान बच गई।

बालवाड़ी के लिए मास्टर ट्रेनर्स का 5 दिवसीय प्रशिक्षण प्रारंभ

श्रीकंचनपथ न्यूज

बालवाड़ी में जाने के लिए बच्चों को करें तैयारः राजेश सिंह राणा

रायपुर। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश में 5 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए बालवाड़ी खोले जाने की तैयारी प्रारंभ कर दी गई है। स्कूल शिक्षा विभाग के विशेष सचिव व राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) के संचालक राजेश सिंह राणा ने आज बालवाड़ी के संबंध में 5 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण में उपस्थित मास्टर ट्रेनर्स से कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की मंशा अनुरूप स्कूल से पहले बच्चों को शैक्षणिक व मानसिक रूप से तैयार कर उन्हें स्कूल आने के लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने कहा कि चयनित शिक्षक इस प्रकार कार्य करें जो बच्चों से जुड़ कर उनके मानसिक स्तर को पहचान सके। शिक्षा गुणवत्ता के लिए आवश्यक के है कि शिक्षा का आधार मजबूत हो। एससीईआरटी में आयोजित प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए 100 से अधिक मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित थे।

राजेश सिंह राणा ने कहा कि बालवाड़ियों के लिए खेल एवं गतिविधि आधारित पाठ्यक्रम एससीईआरटी द्वारा डिजाइन किया गया है, जिसे बच्चों को खेल-खेल में सिखाया जा सके। इस कार्य में नई दिल्ली के शिक्षा मॉडल में कार्य कर रहे अनुभवी शिक्षाविदों की सहायता ली जा रही है। श्री राणा ने कहा कि यह कार्य पूरी संवेदनशीलता के साथ करना है। बच्चों को गतिविधियों में इंवॉल्व करते हुए उन्हें आगे बढ़ने और स्कूल में पढ़ने हेतु प्रेरित करना है। उन्होंने आगे कहा कि स्कूल में जाने से पहले यदि हम 1 साल तक ग्रूम करते हैं जिससे शिक्षा का आधार मजबूत होता है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का नाम मुख्यमंत्री की मंशा अनुसार बालवाड़ी भी रखा गया है। सभी प्रशिक्षकों से अपेक्षा की इस कार्य को मार्च के अंत तक स्कूलों में पहुंचा दें ताकि अप्रैल माह से प्रदेश के 6500 प्राथमिक स्कूलों में सफलतापूर्वक प्रारंभ की जा सके।

उल्लेखनीय है कि 26 जनवरी 2022 को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राज्य में छोटे बच्चों के लिए प्रदेश के 6500 प्रीस्कूल मॉडल बालवाड़ी प्रारंभ करने की घोषणा की थी। प्रशिक्षण में एससीईआरटी के अतिरिक्त संचालक डॉ. योगेश शिवहरे, प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ जया भारती चंद्राकर, सहायक संचालक प्रशांत पांडे, रिसोर्स पर्सन सुनील मिश्रा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में आवाहन ट्रस्ट न्यू दिल्ली की सायंतनी गडम, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन तथा सीएलआर के विषय विशेषज्ञ भी उपस्थित थे।

राज्य में उद्यानिकी गतिविधियों के विस्तार के लिए 10 मार्च तक प्रस्ताव आमंत्रित

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राज्य में उद्यानिकी संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना है। इसके लिए एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना वर्ष 2022-23 अंतर्गत विभिन्न प्रकार की घटक, गतिविधियों के लिए अनुदान प्राप्त करने हेतु इच्छुक कृषकों, निजी उद्यमी, सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं से संचालनालय उद्यानिकी एवं प्रक्षेत्र वानिकी छत्तीसगढ़ द्वारा 10 मार्च तक प्रस्ताव आमंत्रित किये गए हैं। इस संबंध में जिला कार्यालय में पदस्थ उप संचालक, सहायक संचालक उद्यान एवं संचालनालय से सम्पर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्रस्ताव संबंधित जिला कार्यालयों में जमा करना होगा। प्राप्त प्रस्तावों को प्राथमिकता के आधार पर 'पहले आओ पहले पाओ' के तहत स्वीकृत किया जाएगा।

संचालक उद्यानिकी से प्राप्त जानकारी के अनुसार एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना वर्ष 2022-23 अंतर्गत निजी क्षेत्र में हाईटेक नर्सरी यूनिट की स्थापना लागत एक करोड़ रूपए पर संबंधित हितग्राही/संस्था को 40 लाख रूपए का अनुदान दिए जाने का प्रावधान है। इसी तरह निजी क्षेत्र में छोटी नर्सरी इकाई लागत 15 लाख रूपए पर 7.50 लाख रूपए, प्लग टाईप नर्सरी इकाई लागत 104 लाख पर 52 लाख रूपए, विद्यमान टिश्यू कल्चर यूनिट का सुदृढ़ीकरण लागत 20 लाख रूपए पर 10 लाख रूपए, टिश्यू कल्चर यूनिट लागत 2.50 करोड़ रूपए पर एक करोड़ रूपए, सीड इन्फ्रास्ट्रक्चर यूनिट लागत 2 करोड़ रूपए पर एक करोड़ रूपए, मशरूम उत्पादन इकाई लागत 20 लाख पर 8 लाख रूपए, मशरूम स्पॉन यूनिट लागत 15 लाख रूपए पर 6 लाख रूपए, मशरूम कम्पोस्ट यूनिट लागत 20 लाख रूपए पर 8 लाख रूपए, फट लाइन डेमोस्ट्रेशन यूनिट लागत 25 लाख रूपए पर 18.75 लाख रूपए का अनुदान दिए जाने का प्रावधान है।

इसी तरह सामान्य क्षेत्र अंतर्गत इंटिग्रेटेड पैक हाऊस यूनिट लागत 50 लाख रूपए पर 17.50 लाख रूपए, प्री-कूलिंग यूनिट लागत 25 लाख रूपए पर 8.75 लाख रूपए, कोल्ड रूम (स्टेंटिक) यूनिट लागत 15 लाख रूपए पर 5.25 लाख रूपए, कोल्ड स्टोरेज टाइप 1 यूनिट लागत 4 करोड़ रूपए पर 1.40 करोड़, कोल्ड स्टोरेज टाइप-1 (अनुसूचित क्षेत्र) लागत 4 करोड़ रूपए पर 2 करोड़ रूपए, कोल्ड स्टोरेज टाइप-2 (वैकल्पिक प्रौद्योगिकी सामान्य क्षेत्र) लागत 35 लाख रूपए पर 12.25 लाख रूपए का अनुदान देय होगा।

कुलाधिपति सुश्री उइके ने डॉ. चंदेल को इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति सुश्री अनुसुईया उइके ने डॉ. गिरीश चंदेल, विभागाध्यक्ष, डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट मॉलिक्यूलर बॉयोलॉजी एवं बॉयोटेक्नोलॉजी, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर को इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया है। यह नियुक्ति इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम, 1987 (क्रमांक 20 सन् 1987) की धारा 14 की उपधारा (1) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए की गई है। इस संबंध में आज आदेश जारी किया गया।

उल्लेखनीय है कि डॉ. गिरीश चंदेल, देश के प्रख्यात पौध प्रजनक और जैव प्रौद्योगिकी के वैज्ञानिक हैं। छत्तीसगढ़ के सिमगा, हथबंद के ग्राम-कुकरा चुन्दा के मूल निवासी एवं किसान परिवार में जन्मे डॉ. चंदेल को कृषि शिक्षा अनुसंधान और विस्तार प्रबंधन का 30 वर्षों का अनुभव है, जिसमें 07 वर्षों का अनुभव विशेष रूप से सूखे और पोषण अनुसंधान के लिए अत्याधुनिक स्टेट ऑफ आर्ट बुनियादी सुविधाओं के निर्माण और पोषण प्रबंधन पर रहा है। डॉ. चंदेल को अमेरिका की प्रतिष्ठित बोरलॉग फेलोशिप मिली। उन्हें अंतरराष्ट्रीय राइस राइस रिसर्च इंस्टिट्यूट फिलीपींस की भी डॉक्टोरेट फेलोशिप मिली।

डॉ. चंदेल ने अनेक अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सेमिनारों में भाग लिया और उनके 50 से अधिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च पेपर प्रकाशित किए गए। उन्होंने 15 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं का संचालन किया जिसकी लागत लगभग ?20 करोड़ है।

डॉ. चंदेल ने धान की बायोफोर्टीफाइड प्रजातियों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. चंदेल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान एवं विकास कार्यों का वृहद अनुभव है। उन्होंने इंटरनेशनल जेनेटिक इंजीनियरिंग एवं बॉयोटेक्नोलॉजी सेंटर में पीएचडी फेलो तथा इंटरनेशनल राईस रिसर्च इंस्टीट्यूट में विजिटिंग वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया है।

नंदनी रोड, लिंक रोड, सर्कुलर मार्केट, जवाहर मार्केट पावर हाउस, भिलाई के प्रतिष्ठित संस्थान

खास खबर

तापसी पन्नू ने साइन की अनुभव सिन्हा की एंथोलॉजी, बोलीं- इसकी कहानी यूनीक है

तापसी पन्नू एक बार फिर डायरेक्टर अनुभव सिन्हा के प्रोजेक्ट के साथ जुड़ गई हैं। इस बात की जानकारी खुद एक्ट्रेस ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट शेयर कर दी है। उन्होंने लिखा, अनुभव सिन्हा की एंथोलॉजी के साथ एक बार फिर जुड़ कर मैं बहुत खुश हूं। इसको ब्रिलिएंट डायरेक्टर सुधीर मिश्रा डायरेक्ट कर रहे हैं। इसकी स्टोरी बहुत यूनीक है और बैकग्राउंड पैंडेमिक पर बेस्ड है।

अक्षय कुमार की 'बच्चन पांडे' का पहला गाना 'मार खाएगा' आउट

अक्षय कुमार की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'बच्चन पांडे' का पहला गाना मार खाएगा रिलीज हो गया है। खुद अक्षय ने फैंस को सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर इसकी जानकारी दी है। उन्होंने लिखा, क्योंकि भय बनाए रखना जरूरी है। बच्चन पांडे 18 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसमें अक्षय के साथ जैकलीन फर्नांडीज, कृति सेनन, संजय मिश्रा और अरशद वारसी नजर आएंगे।

अरुणोदय सिंह स्टारर 'अपहरण-2' का टीजर आउट

अरुणोदय सिंह स्टारर सीरीज अपहरण के सीजन 2 का टीजर रिलीज हो गया है। मेकर्स ने खुद इसका टीजर अपने सोशल मीडिया पोस्ट पर शेयर किया है। उन्होंने लिखा, हीरो, हिरोइन, विलेन और साइडकिक...सबके नाम पर बिल फटेगा! अपहरण 2 सबका कटेगा दोबारा। इस सीरीज में अरुणोदय के अलावा सानंद वर्मा और निधि सिंह भी नजर आएंगी।

गंगूबाई काठियावाड़ी का बदला जा सकता है नाम, विवादों के बाद इन उिफल्मों का भी रिलीज से पहले बदलना पड़ा था टाइटल

संजयलीला भंसाली की फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी विवादों से घिर गई है। गंगूबाई के परिवार वालों ने फिल्म में उनकी छवि गलत तरीके से पेश करने पर आपत्ति जताते हुए फिल्म रिलीज रोकने की मांग की है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस मामले में जल्द ही फैसला लिया जाएगा। विवादों से बचने के लिए फिल्म का टाइटल भी बदला जा सकता है। इससे पहले भी कई बार विवाद बढ़ने के बाद कई फिल्मों के टाइटल में बदलाव कर उन्हें रिलीज किया गया है।

अक्षय कुमार और कियारा आडवाणी स्टारर फिल्म का टाइटल भी काफी विवादों में था। फिल्म का नाम पहले लक्ष्मी बॉम्ब था। एक्टर मुकेश खन्ना समेत कई लोगों ने लक्ष्मी मां के नाम के आगे बॉम्ब शब्द का इस्तेमाल करने पर फिल्म का विरोध किया था। विवाद बढ़ने पर इसे लक्ष्मी कर दिया गया था।

दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह और शाहिद कपूर स्टारर फिल्म पद्मावत कई कारणों से विवादों में थी। राजपूत समुदाय के लोगों ने फिल्म पर छवि खराब करने का आरोप लगाया था, वहीं कर्णी सेना ने रानी पद्मावती को गलत तरीके से पेश करने पर विरोध किया था। शूटिंग के दौरान संजय लीला भंसाली को कर्णी सेना के लोगों ने थप्पड़ तक मार दिया था। विवादों में आने के बाद 1 दिसम्बर 2017 को रिलीज होने वाली इस फिल्म को डॉक्यूमेंटेशन की कमी के चलते रोक दिया गया था। बाद में कुछ सीन और टाइटल में बदलाव कर फिल्म को 25 जनवरी 2018 में रिलीज किया गया था।

साउथ और बॉलीवुड में बस लैंग्वेज का ही फर्क है, काम करने का स्टाइल और प्राइज सेम हैं: प्रियामणि

साउथ की जानी-मानी एक्ट्रेस प्रियामणि अजय देवगन के साथ मैदान में नजर आने वाली हैं। इसके अलावा वह जैकी श्रॉफ और सनी लियोनी के साथ तमिल फिल्म में काम कर रही हैं। पेंडेमिक में काम करने, साउथ और बॉलीवुड में काम करने का अंतर और जजिंग के अनुभव आदि पर उन्होंने बताया।

पेंडेमिक टाइम में कामकाज का तौर-तरीका किस तरह से बदला हुआ पाती हैं?

आई थिंक, पर्सनल एक्सप्रीरिंस में बहुत सारा चेंज तो नहीं देखा है। बेशक, जब से काम कर रही हूं, तब से थोड़ा-बहुत चेंज तो आया ही है और यह चेंज होता ही रहता है। अगर साउथ और नॉर्थ, दोनों इंडस्ट्री में देखेंगे, तब प्रोफेशनलिज्म वही है। काम भी वैसा ही हो रहा है। ज्यादा कुछ अंतर नहीं है।

मेरा सवाल पेंडेमिक टाइम के बाद आए बदलाव को लेकर है?

पहले लोग बिना मास्क के भी घूम रहे थे, लेकिन अब सब लोग मास्क पहन रहे हैं। अगर कोई नहीं पहन रहा है, तब लोग उसे बोल भी रहे हैं। लोग सैनिटाइजर साथ लेकर चल रहे हैं। मुझे जहां तक पता है, लोग सोशल डिसटेंसिंग का भी ध्यान रख रहे हैं।

अच्छा, साउथ और हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कामकाज का अंतर क्या पाती हैं?

बहुत अंतर नहीं है। सिर्फ लैंग्वेज का अंतर है। डायलॉग, डायरेक्टर, को-स्टार और यूनिट का अंतर है, इसके अलावा कुछ अंतर नहीं है। काम करने की स्टाइल और प्राइज भी सभी जगह पर सेम ही होगा।

आप कई शोज जज चुकी हैं। जज की कुर्सी पर होती हैं, तब क्रिएटिव सैटिसफिक्शन क्या पाती हैं?

जज की कुर्सी पर बैठती हूं, तब एक ऑडियंस के पॉइंट ऑफ व्यू से देखती हूं। मुझे जैसा अच्छा लगता है, वैसा सजेस्ट करती हूं। किसी का परफॉर्मेंस अच्छा नहीं भी लगे, तब डिसकरेज नहीं करती हूं। मेरा जज करने का तरीका एक दोस्त की तरह होता है। मैं फ्रेंड की तरह प्रतिभागियों को हेल्प करती हूं। अगली बार परफॉर्मेंस दें, तब उसे बेहतर बनाने के लिए क्या जोड़ या निकाल सकते हैं। इस तरह सजेस्ट करती हूं। मैं ही नहीं, बल्कि मेरे को-जजेस भी इन बातों पर ध्यान देते हैं। एक प्रतिभागी का नॉन स्टॉप 6 मिनट का डांस करना बहुत बड़ी बात है। बहुत टैलेंटेड बच्चे आते हैं और सुबह से लेकर रात तक बहुत हार्डवर्क और प्रैक्टिस करते हैं। ऐसे में एक दोस्त की तरह ही उन्हें एडवाइज करती हूं।

मनोज बाजपेयी के साथ काम कर चुकी हैं। उनके साथ का एक वाकया बताएंगी?

उनके साथ काम करने का अनुभव बहुत अच्छा था। मैं तो उनके साथ सीजन-3 शूट करने का इंतजार कर रही हूं कि कब शुरू करूंगी। उनके साथ काम करने को लेकर पहले सीजन में बहुत नर्वस थी। लेकिन अब सेकंड सीजन तक आते-आते हम दोस्त बन गए हैं। हम लोग फैमिली मैन के एक सोशल ग्रुप से जुड़े हैं। हम डेली चैट करते हैं, ऐसा नहीं है। लेकिन जब भी मिलते और बात करते हैं, तब ऐसा नहीं लगता कि हमें साथ काम करके इतना टाइम हो गया है। हम एक-दूसरे से तीसरे सीजन के शुरू होने के बारे में बात करते हैं। लेकिन अभी हमारे पास कोई अपडेट नहीं है।

इन फिल्मों को रिजेक्ट कर बेहद पछताए होंगे शाहिद कपूर, इनकी बदौलत सुपरस्टार बने दूसरे सितारे

25 फरवरी को शाहिद कपूर 41वां जन्मदिन मना रहे हैं। शाहिद को बॉलीवुड में उनके अभिनय के साथ-साथ उनके डांस, लुक और रोमांटिक छवि के लिए भी जाना जाता है। शाहिद की पहली फिल्म से ही लड़कियां उनकी दीवानी हो गई थीं और आज भी इस दीवानगी का सिलसिला जारी है। शाहिद ने अब तक के करियर में कई हिट और शानदार फिल्में की हैं। हालांकि फिल्में रिजेक्ट करने के मामले में भी शाहिद किसी से पीछे नहीं रहे। उन्होंने अपने करियर में कई ऐसी फिल्में रिजेक्ट कर दीं जो बाद में सुपरहिट हो गईं और इसका पछतावा भी शाहिद को रहा।

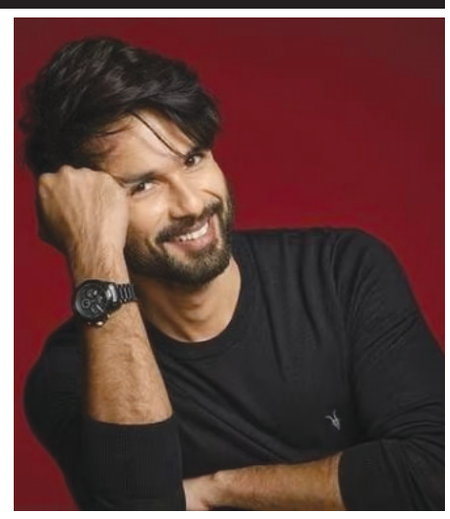

रांझणा

सोनम कपूर, धनुष और अभय देओल की फिल्म 'रांझणा' को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। धनुष की भूमिका पहले शाहिद को ऑफर की गई थी लेकिन उन्होंने इसे मना कर दिया। शाहिद उस वक्त 'आर राजकुमार' कर रहे थे जिस वजह से उन्होंने इस फिल्म को करने से इनकार कर दिया।

रॉकस्टार

'रॉकस्टार' सबसे पहले शाहिद कपूर को ऑफर हुई थी। हालांकि इस फिल्म की जगह उन्होंने 'जब वी मेट' को चुना था। हालांकि ये फिल्म भी अपने टाइम की हिट रही थी। इस फिल्म में रणबीर कपूर की एक्टिंग ने सभी का दिल जीत लिया था।

रंग दे बसंती

शाहिद को रंग दे बसंती में करण सिंघानिया का रोल ऑफर हुआ था लेकिन उन्होंने इसे करने से मना कर दिया था। दर्शकों ने फिल्म को पसंद किया था और इसे कई अवॉर्ड्स भी मिले थे। एक इंटरव्यू के दौरान शाहिद ने बताया कि उन्हें रंग दे बसंती न करने का पछतावा है।

शुद्ध देसी रोमांस

शाहिद कपूर को मनीष शर्मा की रोमांटिक-कॉमेडी शुद्ध देसी रोमांस में देखना दिलचस्प होता। फिल्म ने न केवल बॉक्स-ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया, बल्कि समीक्षकों द्वारा भी इसे खूब सराहा गया था। शाहिद ने इस फिल्म को ठुकराने का कारण नहीं बताया।

अनीता भाभी का किरदार निभाती नजर आएंगी विदिशा श्रीवास्तव, नेहा पेंडसे को किया है रिप्लेस

टीवी की दुनिया का मशहूर कॉमेडी शो 'भाभी जी घर पर हैं' हर घर में देखा जाता है। इसके किरदारों और उनके तकिया कलामों को लोग याद रखते हैं और इस शो को देखना काफी पसंद करते हैं। नेहा पेंडसे के शो छोड़ने की खबर से फैंस को काफी धक्का लगा था, लेकिन अब इस सीरियल को देखने वालों के लिए अच्छी खबर है। इस सीरियल को नई अनीता भाभी मिल गई हैं। टीवी एक्ट्रेस विदिशा श्रीवास्तव इस शो में अब अनीता भाभी का किरदार निभाएंगी।

एंड टीवी के इस धमाकेदार शो में अब एक नई अभिनेत्री का नाम जुड़ गया है। ये नया नाम और कोई नहीं बल्कि काशीबाई बाजीराव बल्लाल शो में शिव बाई का किरदार निभा रहीं अभिनेत्री विदिशा श्रीवास्तव का है। विदिशा ने एक इंटरव्यू में बात करते हुए इस बात का खुलासा किया और कहा, इतने फेमस शो में मेन लीड का किरदार निभाना मेरे लिए एक बड़ा अवसर है और साथ ही बड़ा चैलेंज भी। शो के प्रोड्यूसर्स ने बहुत सी एक्ट्रेसेज का ऑडिशन लिया था, लेकिन फिर मेरा सलेक्शन हो गया।

बर्थ एनिवर्सरी: 3 साल के करियर में 20 फिल्में कर चुकी थीं दिव्या भारती

90 के दशक की लोकप्रिय अभिनेत्री दिव्या भारती की आज 48वीं बर्थ एनिवर्सरी है। दिव्या का 19 साल की उम्र में 5 अप्रैल, 1993 को निधन हो गया था। अगर आज वह जीवित होतीं तो 48 साल की हो गई होतीं। 1990 के दशक में बॉलीवुड में अपनी एक्टिंग और मासूम चेहरे के दम पर दिव्या ने दर्शकों को दीवाना बना दिया था। कम उम्र थी, इसलिए बॉलीवुड की गुड़िया भी उन्हें कहा गया। 25 फरवरी 1974 को जन्मी दिव्या भारती की मौत 5 अप्रैल 1993 को संदिग्ध हालात में हुई थी। मुंबई पुलिस 1998 में ही मौत की जांच से जुड़ा केस बंद कर चुकी है। पुलिस ने यह मानकर केस खत्म कर दिया कि यह एक हादसा था।

दिव्या किसी फिल्मी परिवार से नहीं थीं। पिता ओमप्रकाश भारती बीमा कंपनी में अफसर थे और माता मीता भारती एक गृहिणी। दिव्या ने 9वीं क्लास तक ही पढ़ाई की। 14 साल की उम्र में पढ़ाई छोड़कर मॉडलिंग शुरू कर दी थी।

'बोब्बिली राजा' से शुरू हुआ था करियर

गोविंदा के भाई कीर्ति कुमार ने दिव्या को अपनी फिल्म 'राधा का संगम' के लिए साइन किया था। मगर किसी कारणवश दिव्या को फिल्म से बाहर किया गया और उनकी जगह जूही चावला ने अदाकारी की। दिव्या ने तेलुगू फिल्म 'बोब्बिली राजा' से फिल्मी करियर की शुरुआत की। फिल्म सुपरहिट रही और इसने दिव्या को साउथ फिल्म इंडस्ट्री में सुपरस्टार बना दिया। तब राजीव राय ने 'विश्वात्मा' में दिव्या को सनी देओल के अपोजिट कास्ट किया। इस फिल्म का 'सात समंदर पार मैं तेरे पीछे-पीछे आ गई...' गाना आज भी लोकप्रिय है। तीन साल में दिव्या ने 20 फिल्में कर शोहरत पाई।

साजिद नडियाडवाला से शादी कर सबको चौंकाया

1992 में दिव्या की फिल्मों ने उन्हें शोहरत के बड़े मुकाम पर पहुंचा दिया था। शाहरुख खान ने दिव्या के साथ ही 1992 में 'दीवाना' फिल्म से डेब्यू किया। उस समय दिव्या महज 18 साल की थीं। फिल्म जबरदस्त हिट हुई। बाद में फिल्म निर्माता साजिद नाडियाडवाला से शादी कर दिव्या ने सबको चौंका दिया था।

20 मई, 1992 को हेयर ड्रेसर संध्या और उनके पति की मौजूदगी में दिव्या-साजिद की शादी हुई थी। साजिद के वर्सोवा स्थित तुलसी अपार्टमेंट में काजी ने इनका निकाह पढ़ा। दिव्या ने इस्लाम कबूला और अपना नाम बदलकर 'सना' रखा। साजिद ने एक इंटरव्यू में बताया था, हमने शादी की बात छिपाई रखी, क्योंकि दिव्या का करियर दांव पर लगा था। यह बात बाहर निकलती तो प्रोड्यूसर डर जाते। इससे उलट मुझे लगता था कि हमें यह बात जगजाहिर करनी थी। दिव्या हमेशा से अपनी शादी की बात सबको बताना चाहती थी। लेकिन मैं उन्हें बार-बार मना करता था। शायद मुझे ऐसा नहीं करना था।

शादी के बाद तनाव में थीं दिव्या

बताया जाता है कि साजिद से शादी के बाद दिव्या अक्सर तनाव में रहती थीं। इसी तनाव की वजह से उन्होंने शराब पीना शुरू कर दिया था। जिस रात उनकी मौत हुई, उस रात भी वह शराब के नशे में थीं। रिपोर्ट्स के अनुसार 5 अप्रैल 1993 को दिव्या चेन्नई से मुंबई के वर्सोवा स्थित घर लौटी थीं। उन्हें हैदराबाद जाना था, पर पैर में चोट की वजह से शूटिंग टाल दी गई थी। फैशन डिजाइनर नीता लुल्ला अपने पति डॉ. श्याम लुल्ला के साथ दिव्या के घर पहुंची थीं। तीनों मिलकर शराब पी रहे थे। घर में दिव्या की मेड अमृता भी थी। दिव्या लिविंग रूम की खिड़की पर बाहर की तरफ पैर कर बैठी थीं। इस पर ग्रिल नहीं लगी थी। यह पार्किंग की ओर खुलती थी। उठने की कोशिश में हाथ फिसला और वह 5वीं मंजिल से सीधे नीचे गिरीं। नीता, श्याम और अमृता उन्हें लेकर कपूर अस्पताल ले गए, लेकिन दिव्या को नहीं बचाया जा सका। कुछ ने इसे आत्महत्या बताया और कुछ ने साजिश। पर कुछ भी साबित नहीं हो सका। दिव्या की मौत के बाद तीन फिल्में 'रंग', 'शतरंज' और 'थोलि मुद्धु' रिलीज हुई, जिसमें रंग सुपरहिट रही थी।

आमिर ने दिव्या के साथ काम करने से किया था इनकार

दिव्या को लेकर यूं तो कई किस्से मशहूर हैं लेकिन एक बार दिवंगत एक्ट्रेस दिव्या भारती ने खुद खुलासा किया था कि आमिर खान की वजह से वे कई घंटे तक रोती रही थीं।

कहा जाता है कि लंदन में हुए एक शो में दिव्या भारती अपनी डांस स्टेप्स भूल गई थीं जिसकी वजह से आमिर उनसे नाराज हो गए थे। हालांकि, जब इस बारे में खुद दिव्या से बात की गई तो उन्होंने कहा था कि आमिर को उनसे माफी मांगनी चाहिए। दिव्या ने यह भी कहा था कि शो के दौरान उनसे गलती हुई थी, लेकिन उन्होंने उसे तेजी से कवर कर लिया था।

आमिर ने दिव्या के साथ परफॉर्म करने से कर दिया था इनकार

दिव्या भारती ने भले ही अपनी गलती को कवर कर लिया था। लेकिन आमिर नहीं माने। कहा जाता है कि आमिर ने ऑर्गेनाइजर्स से दिव्या की जगह जूही चावला से परफॉर्मेंस कराने की सलाह दी थी। इतना ही नहीं, आमिर ने दिव्या के साथ परफॉर्म करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने थकान का बहाना बनाया था। इसके बाद सलमान खान दिव्या के सपोर्ट में आए और उन्होंने स्टेज पर उनके साथ जबर्दस्त परफॉर्मेंस दी।

डर से करवा दिया था रिप्लेस

दिव्या की मां ने एक इंटरव्यू में कहा था कि बाद में आमिर की वजह से फिल्म 'डर' में उनकी बेटी को जूही चावला से रिप्लेस कर दिया गया था। 1993 में आई फिल्म 'डर' में जहां पहले शाहरुख खान की जगह आमिर खान काम करने वाले थे तो वहीं जूही चावला की जगह दिव्या भारती लीड रोल में थीं। जब आमिर को फिल्म ऑफर हुई तो उन्हें पता चला कि फिल्म में दिव्या भारती लीड रोल में है। उन्होंने जोड़तोड़ करके फिल्म में दिव्या की जगह जूही को रोल दिलवा दिया। आमिर की इस हरकत से दिव्या शॉक्ड रह गई थी। हालांकि, बाद में आमिर के तेवर देखकर फिल्म के डायरेक्टर और प्रोड्यूसर रहे यश चोपड़ा ने उन्हें ही फिल्म हटा दिया था और उनकी जगह शाहरुख को ले लिया था।

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :- 9303289950, 9827806026, 8962815243

खास खबर

विधायक रामपुकार सिंह ने रूर्बन मिशन अंतर्गत प्रदत्त एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

जशपुरनगर। विधायक पत्थलगांव रामपुकार सिंह ने आज विकासखंड पत्थलगांव के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में लोगों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए रूर्बन मिशन अंतर्गत प्रदत्त एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी कर्मचारी सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। रूर्बन मिशन के जिला सलाहकार राजेश जैन से प्राप्त जानकारी के अनुसार रूर्बन क्लस्टर पालीडीह के विकास हेतु मिशन अंतर्गत 11 लाख की लागत से एम्बुलेंस प्रदान किया गया है। साथ ही एम्बुलेंस में चिकित्सीय उपकरण की व्यवस्था हेतु 6 लाख की स्वीकृति दी गई है। उन्होंने बताया कि पालीडीह में रूर्बन मिशन के तहत 28.51 लाख की लागत से उप स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण किया जा रहा है। उप स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए 7 लाख की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। रूर्बन कलस्टर से जुड़ने के बाद पालीडीह, इंजको, तिलडेगा, पतरापाली, कुमेकेला, गोडीकला पंचायतों में सर्व सुविधायुक्त सामुदायिक भवन, यात्री प्रतिक्षालय, स्ट्रीट लाईट सहित अन्य निर्माण कार्य किया जा रहा है।

पढ़ाई में निरंतरता होनी चाहिए - धनेन्द्र साहू

राजिम। स्कूल शिक्षा विभाग आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास विभाग द्वारा आयोजित स्कूली छात्रों के कार्यक्रम के मुख्यअतिथि धनेन्द्र साहू ने कहा कि पढ़ाई में निरंतरता होनी चाहिए, लेकिन कोरोना काल के कारण पिछले दो वर्षो से छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हुई है। छत्तीसगढ़ सरकार ने पढ़ाई तुंहर द्वार जैसे योजना चलाकार जोड़े रखा। ऑफ्लाईन, ऑनलाईन में निरंतर लगे रहे। यहां कला संस्कृति की अपार संभावनाएं है। इस कार्यक्रम में तीन जिला धमतरी, रायपुर एवं गरियाबंद के बच्चे लाभान्वित हुए है। छात्रों की प्रतिभा खुलकर सामने आयी है। बच्चों के भविष्य को अच्छा गढ़ा जाए इस दिशा में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अलग-अलग योजनाओं के माध्यम से उन्हें लाभान्वित कर रहे है।

केंद्रीय मंत्री ने किया कोल इंडिया लिमिटेड के ईआरपी सिस्टम का शुभारंभ

श्रीकंचनपथ न्यूज

नई दिल्ली (पीआईबी)। केंद्रीय कोयला, खान एवं संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी ने कहा कि कोयला उत्पादन और आपूर्ति को और बढ़ाने के संदर्भ में नवीनतम आईटी समर्थित प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल के साथ-साथ इसका निरंतर और कुशल तरीके से कार्यान्वयन करना कुल मिलाकर महत्वपूर्ण है।

प्रह्लाद जोशी ने कल यहां एक समारोह में कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) के उद्यम संसाधन योजना (ईआरपी) प्रणाली कार्यान्वयन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम नेतृत्व में जनधन खाता के शुभारंभ के लिए केंद्र द्वारा आईटी उपकरणों के प्रभावी उपयोग के बारे में चर्चा की। जोशी ने कहा कि प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से पारदर्शिता सुनिश्चित होने के साथ-साथ भ्रष्टाचार में भी कमी हो सकती है। उन्होंने कहा कि कोयला मंत्रालय द्वारा कोयला खदानों की व्यावसायिक नीलामी के तहत अब तक 42 कोयला ब्लॉकों की सफलतापूर्वक नीलामी की जा चुकी है। उन्होंने राष्ट्र को निरंतर कोयले की आपूर्ति सुनिश्चित करके हाल की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए सीआईएल की सराहना की। उन्होंने सीआईएल से मौजूदा और अगले वित्त वर्ष के लिए निर्धारित कोयला उत्पादन लक्ष्य हासिल करने का आग्रह किया।

जोशी ने शुरू की गई ईआरपी प्रणाली के अनूठे फायदों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य सीआईएल को ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक इकाई के रूप में स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि ईआरपी से सीआईएल और उसकी सहायक कंपनियों में सर्वोत्तम व्यावसायिक तौर-तरीके स्थापित होने के साथ-साथ व्यावसायिक प्रक्रियाओं का मानकीकरण और एकीकरण हो सकेगा। जोशी ने कहा कि कोल इंडिया में ईआरपी के कार्यान्वयन से डिजिटल और न्यू इंडिया की दिशा में सरकार के प्रयासों को बढ़ावा मिलेगा।

इस अवसर पर जोशी ने कोयला, खान और रेल राज्य मंत्री रावसाहेब पाटिल दानवे और कोयला सचिव डा. अनिल कुमार जैन के साथ फ्यूलिंग इंडियाज एनर्जी नीड्स नामक पुस्तक का विमोचन किया। इस पुस्तक में दुनिया की सबसे बड़ी कोयला खनन कंपनी, सीआईएल के सतत प्रयासों की कहानी शामिल है। ईआरपी सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल का एक महत्वपूर्ण औजार है, जो सीआईएल को डेटा जोड़ने और लागत में कमी लाने के साथ अपने व्यावसायिक निष्पादन और विकास में सुधार करने में मदद करेगा। इससे देश की इस खनिक इकाई को एक वैश्विक इकाई के रूप में विकसित होने में मदद मिलेगी। सीआईएल में एसएपी ईआरपी में सात मॉड्यूल शामिल हैं जैसे मानव पूंजी प्रबंधन (एचसीएम), बिक्री तथा वितरण (एसडी), उत्पादन एवं योजना (पीपी), संयंत्र रखरखाव (पीएम), परियोजना प्रणाली (पीएस), सामग्री प्रबंधन (एमएम) और वित्त तथा नियंत्रण (एफआईसीओ)।

कोल इंडिया में ईआरपी को दो चरणों में लागू किया गया है। पहले चरण में, इसे सीआईएल मुख्यालय और दो सहायक डब्ल्यूसीएल और एमसीएल में लागू किया गया था।

प्रदेश के 8 जिला अस्पतालों में निःशुल्क डायलिसिस सुविधा

दूरस्थ अंचल बीजापुर, जशपुर और अंबिकापुर के किडनी रोगियों को भी मिल रही है डायलिसिस सुविधा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत राष्ट्रीय निःशुल्क डायलिसिस कार्यक्रम के तहत राज्य के आठ जिला अस्पतालों में 'जीवन धारा' नाम से निःशुल्क डायलिसिस की सुविधा प्रदान की जा रही है। किडनी रोगों से ग्रस्त मरीजों को लंबे समय तक बार-बार डायलिसिस कराना पड़ता है।

इससे उन पर बड़ा आर्थिक बोझ पड़ता है। स्थानीय स्तर पर ही डायलिसिस की सुविधा मिलने से किडनी रोगों से पीड़ितों को अब दूर नहीं जाना पड़ रहा है। इससे मरीजों और उनके परिजनों के श्रम, धन और समय की भी बचत हो रही है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, छत्तीसगढ़ द्वारा प्रदेश के आठ जिलों दुर्ग, कांकेर, कोरबा, बिलासपुर, जशपुर, सरगुजा, महासमुंद और बीजापुर में निःशुल्क डायलिसिस की सुविधा प्रदान की जा रही है।

इसके लिए जशपुर, दुर्ग व कांकेर जिले में पांच-पांच, अंबिकापुर व महासमुंद में चार-चार, कोरबा में छह, बीजापुर में तीन एवं बिलासपुर में चार (सिम्स मेडिकल कॉलेज में तीन और बिलासपुर कोविड अस्पताल में एक) इस तरह कुल 36 मशीनों की स्थापना की गई है।

राष्ट्रीय निःशुल्क डायलिसिस कार्यक्रम के तहत अब तक आठ जिला अस्पतालों में कुल 23 हजार 129 डायलिसिस सेशन किए जा चुके हैं। इनमें से दुर्ग जिले में 4885, कोरबा में 4872, कांकेर में 4230, बिलासपुर में 3504, महासमुंद में 2631, सरगुजा में 1390, बीजापुर में 942 एवं जशपुर में 675 सेशन किए गए हैं।

राष्ट्रव्यापी कोविड टीकाकरण के तहत अब तक 176.52 करोड़ से अधिक लगे टीके

श्रीकंचनपथ न्यूज

नई दिल्ली। 24 घंटों में 30.49 लाख से अधिक (30,49,988) वैक्सीन की खुराक देने के साथ ही भारत का कोविड-19 टीकाकरण कवरेज आज सुबह 7 बजे तक अंतिम रिपोर्ट के अनुसार 176.52 करोड़ (1,76,52,31,385) से अधिक हो गया।

इस उपलब्धि को 2,01,49,530 टीकाकरण सत्रों के जरिये प्राप्त किया गया है। 24 घंटों में 30,009 रोगियों के ठीक होने के साथ ही स्वस्थ होने वाले मरीजों (महामारी की शुरुआत के बाद से) की कुल संख्या बढ़कर 4,22,19,896 हो गई है।

नतीजतन, भारत में स्वस्थ होने की दर 98.46 प्रतिशत है।

24 घंटे में 14,148 नए मरीज सामने आए हैं। वर्तमान में 1,48,359 सक्रिय रोगी हैं। वर्तमान में ये सक्रिय मामले देश के कुल पुष्टि वाले मरीजों का 0.35 प्रतिशत हैं। देश भर में जांच क्षमता का विस्तार लगातार जारी है। पिछले 24 घंटों में कुल 11,55,147 जांच की गई हैं। भारत ने अब तक कुल 76.35 करोड़ (76,35,69,165) जांच की गई हैं।

देश भर में जांच क्षमता को बढ़ाया गया है, साप्ताहिक पुष्टि वाले मामलों की दर 1.60 प्रतिशत है, दैनिक रूप से पुष्टि वाले मामलों की दर 1.22 प्रतिशत है।

पीएम ने कृषि क्षेत्र में केंद्रीय बजट 2022 के सकारात्मक प्रभाव पर एक वेबिनार को संबोधित किया

श्रीकंचनपथ न्यूज

नई दिल्ली (पीआईबी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कृषि क्षेत्र में केंद्रीय बजट 2022 के सकारात्मक प्रभाव पर एक वेबिनार को संबोधित किया। उन्होंने उन तरीकों पर चर्चा की जिनसे बजट कृषि क्षेत्र को मजबूत करने में योगदान मिलेगा। वेबिनार स्मार्ट कृषि- कार्यान्वयन के लिए रणनीतियों पर केंद्रित था। इस अवसर पर संबंधित केंद्रीय मंत्री, राज्य सरकारों के प्रतिनिधि, उद्योग तथा शिक्षा जगत के प्रतिनिधि एवं विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसान उपस्थित थे।

शुरुआत में, प्रधानमंत्री ने पीएम किसान सम्मान निधि के शुभारंभ की तीसरी वर्षगांठ के बारे में बताया। प्रधानमंत्री ने कहा, ये योजना आज देश के छोटे किसानों का बहुत बड़ा संबल बनी है। इसके तहत देश के 11 करोड़ किसानों को लगभग पौने 2 लाख करोड़ रुपए दिए जा चुके हैं। प्रधानमंत्री ने बीज से लेकर बाजार तक फैली कई नई प्रणालियों और कृषि क्षेत्र में पुरानी प्रणालियों में सुधार के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा, बीते 7 सालों में हमने बीज से बाज़ार तक ऐसी ही अनेक नई व्यवस्थाएं तैयार की हैं, पुरानी व्यवस्थाओं में सुधार किया है। सिर्फ 6 सालों में कृषि बजट कई गुणा बढ़ा है। किसानों के लिए कृषि लोन में भी 7 सालों में ढाई गुणा की बढ़ोतरी की गई है। उन्होंने बताया कि महामारी के कठिन दौर में 3 करोड़ किसानों को विशेष अभियान के तहत किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) दिए गए और पशुपालन तथा मत्स्य पालन में लगे किसानों को केसीसी की सुविधा प्रदान की गई। उन्होंने कहा कि छोटे किसानों के बड़े लाभ के लिए सूक्ष्म सिंचाई नेटवर्क को भी मजबूत किया गया है।

उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से किसान रिकॉर्ड उत्पादन दे रहे हैं और एमएसपी खरीद में भी नए रिकॉर्ड बने हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि जैविक खेती को प्रोत्साहन देने से जैविक उत्पादों का बाजार 11000 करोड़ तक पहुंच गया है, निर्यात 6 साल पहले के 2000 करोड़ रुपये से बढ़कर अब 7000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि बजट में कृषि को आधुनिक और स्मार्ट बनाने के लिए मुख्य रूप से सात रास्ते सुझाए गए हैं। पहला- गंगा के दोनों किनारों पर 5 कि.मी. के दायरे में नेचुरल फार्मिंग को मिशन मोड पर कराने का लक्ष्य है। दूसरा- एग्रीकल्चर और हॉर्टीकल्चर में आधुनिक टेक्नॉलॉजी किसानों को उपलब्ध कराई जाएगी। तीसरा- खाद्य तेल का आयात घटाने के उद्देश्य से मिशन ऑयल पाम को सशक्त करने पर जोर दिया गया है। चौथा- कृषि उत्पादों के परिवहन के लिए पीएम गति-शक्ति योजना के माध्यम से नई रसद व्यवस्था की जाएगी। बजट में पांचवां समाधान बेहतर कृषि-अपशिष्ट प्रबंधन और कचरे से ऊर्जा उत्पादन द्वारा किसानों की आय बढ़ाना है। छठा, 1.5 लाख से अधिक डाकघर नियमित बैंकिंग जैसी सेवाएं प्रदान करेंगे ताकि किसानों को परेशानी न हो। सातवां, कौशल विकास तथा मानव संसाधन विकास के संबंध में कृषि अनुसंधान और शिक्षा पाठ्यक्रम को आधुनिक समय की मांगों के अनुरूप बदला जाएगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि साल 2023 इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स है। इसमें भी हमारा कॉरपोरेट जगत आगे आए, भारत के मिलेट्स की ब्रैंडिंग करे, प्रचार करे। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे दूसरे देशों में जो बड़े मिशन्स हैं वो भी अपने देशों में बड़े-बड़े सेमीनार करे, वहां के लोगों को जागरूक करे कि भारत के मिलेट्स कितने उत्तम हैं। प्रधानमंत्री ने पर्यावरण के अनुकूल जीवन-शैली तथा प्राकृतिक एवं जैविक उत्पादों को लेकर बाजार के बेहतर परिणाम के बारे में बढ़ती जागरूकता का लाभ उठाने के लिए भी कहा। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए एक-एक गांव गोद लेकर प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूकता पैदा करने का आग्रह किया।

मोदी ने भारत में मृदा परीक्षण संस्कृति को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। मृदा स्वास्थ्य कार्डों पर सरकार के फोकस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने स्टार्टअप्स से नियमित अंतराल पर मृदा परीक्षण के कार्य को सुविधाजनक बनाने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

सिंचाई के क्षेत्र में नवाचारों पर जोर देते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि पर ड्रॉप मोर क्रॉप पर सरकार का बहुत जोर है और ये समय की मांग भी है। उन्होंने कहा कि इसमें भी व्यापार जगत के लिए बहुत संभावनाएं हैं। उन्होंने यह भी बताया कि केन-बेतवा लिंक परियोजना से बुंदेलखंड में क्या परिवर्तन आएंगे, ये आप सभी भलीभांति जानते हैं। मोदी ने लंबित सिंचाई परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने की आवश्यकता को भी दोहराया।

ग्राम पंचायतों में लगाए जा रहे आयुष्मान शिविर

सुकमा। जिला प्रशासन द्वारा ग्राम पंचायतों में शिविर लगाकर ग्रामीणों का आयुष्मान पंजीयन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में आज ग्राम पंचायत बुर्कालंका के ग्रामीणों का आयुष्मान पंजीयन ग्राम भेज्जी, हाईस्कूल में आयुष्मान शिविर के माध्यम से स्वास्थ्य कार्ड बनवाने हेतु किया गया। ''आपके द्वार आयुष्मान अभियान'' आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना अंतर्गत पात्र समस्त हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड जिला अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा कॉमन च्वाईस सेंटर में निःशुल्क बनाया जा रहा है। जिन ग्रामीणों ने अब तक आयुष्मान कार्ड नहीं बनावाए हैं।

शाकद्वीपीय ब्राम्हण समाज का प्रतिनिधिमंडल मिला केबिनेट मंत्री से समाज के लिए भवन की मांग की

श्रीकंचनपथ न्यूज

कवर्धा। शाकद्वीपीय ब्राम्हण समाज, कवर्धा परिक्षेत्र के प्रतिनिधिमंडल ने कवर्धा के विधायक व प्रदेश के केबिनेट मंत्री मोहम्मद अकबर से राजधानी रायपुर स्थित शासकीय निवास कार्यालय में सौजन्य भेंट कर चर्चा की। प्रतिनिधि मंडल में समाज के अध्यक्ष, सनत प्रसाद शर्मा राजपुरोहित सहित सर्व दीनानाथ शर्मा, बृजकिशोर पांडे, रमेश शर्मा, बिरेन्द्र शर्मा, संजय शर्मा, प्रणव शर्मा, अनिश शर्मा, प्रफुल्ल शर्मा, अमित शर्मा, गोपी, शर्मा, अतुल पाण्डेय आदि शामिल थे।

प्रतिनिधि मंडल में चर्चा के दौरान केबिनेट मंत्री श्री मोहम्मद अकबर के द्वारा किए जाने वाले सहयोग के लिए समाज की ओर से आभार माना। प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने कवर्धा क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा अपनी ओर से सुझाव भी दिये। उन्होंने केबिनेट मंत्री से शाकद्वीपीय ब्राम्हण समाज के लिए भवन निर्माण कराने की मांग की। श्री मोहम्मद अकबर ने इस संबंध में सकारात्मक कार्यवाही का आश्वासन दिया।

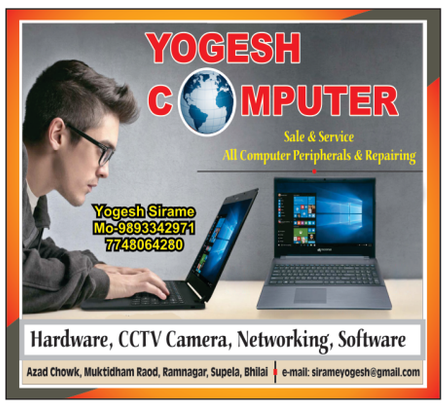

खास-खबर

राशन दुकान में चोरी करने वाले 2 युवक गिरफ्तार

भिलाई। आरक्षी नगर सुपेला में स्थित शासकीय राशन की दुकान का ताला तोड़कर चावल, शक्कर और तौल कांटा चोरी करने वाले आरोपितों को सुपेला पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपितों के पास से चोरी का सामान जब्त किया गया है। उन्हें न्यायायिक रिमांड पर जेल भेजा गया है। पुलिस ने बताया कि दुकान संचालक मोहम्मद ईशा ने घटना की प्राथमिकी दर्ज कराई थी कि 22 फरवरी की रात को उसकी दुकान में चोरी हुई है। घटना की शिकायत पर पुलिस ने संदेह के आधार पर चंगोराभाठा डीडी नगर रायपुर निवासी हाल निवास आरक्षी नगर सुपेला आरोपित राजा बाबू (27) और डेरा बस्ती फरीद नगर निवासी मजनू कुम्हरे (27) को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में दोनों आरोपितों ने चोरी करने की बात स्वीकार की।

वहीं, दो महीने से फरार चल रहे एक लूट के आरोपित को भिलाई नगर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपित के खिलाफ लूट की धारा के तहत कार्रवाई की गई है। पुलिस ने बताया कि हुडको निवासी आरोपित मोहन दुबे उर्फ कादिर (46) के खिलाफ दो महीने पहले लूट की धारा के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी। घटना के बाद से फरार था। उसे गुरुवार को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। इसके अलावा सुभाष चौक बोरसी निवासी आरोपित भरत सहगल (21) को चोरी की बाइक के साथ गिरफ्तार किया गया है।

ट्रक की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत

स्कूटी पर सवार थे 4 लोग, ओवरटेक करने की चक्कर में ट्रक से टकराए, 3 घायल

दंतेवाड़ा (ए)। दंतेवाड़ा जिले में ट्रक की टक्कर से स्कूटी सवार एक युवक की मौत हो गई है। जबकि 3 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। तीनों घायलों को दंतेवाड़ा के जिला अस्पताल लाया गया है। बताया जा रहा है कि एक ही स्कूटी में 4 लोग सवार होकर दंतेवाड़ा की तरफ आ रहे थे। इस दौरान ट्रक से टक्कर हो गई। हादसा दंतेवाड़ा-बचेली मुख्यमार्ग में भांसी के पास हुआ है। मामला भांसी थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, लौह अयस्क भरकर बचेली की तरफ से एक ट्रक दंतेवाड़ा की तरफ आ रही थी। इसी दिशा से स्कूटी में सवार होकर 4 युवक राजकुमार (19), जोगेंद्र (18), आकाश कुमार (21) और पिंटू ओयामी (22) आ रहे थे। इस बीच ट्रक को ओवरटेक करने के चक्कर में ट्रक के साथ स्कूटी टकरा गई। जिससे स्कूटी में सवार पिंटू ओयामी ट्रक के टायर के नीचे आ गया था। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

जबकि, अन्य 3 युवक यहां-वहां फेंका गए। तीनों युवकों को गंभीर रूप से चोटें आई हैं। इस हादसे के बाद इसी मार्ग से गुजर रहे राहगीरों ने एंबुलेंस को इस हादसे की सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची 108 ने सभी घायलों को फौरन दंतेवाड़ा जिला अस्पताल लाया। जहां सभी का उपचार किया जा रहा है। डॉक्टरों की मानें तो तीनों युवकों की हालत काफी गंभीर बनी हुई है।

38 बकायादारों की सूची जारी, 23 के खिलाफ कुर्की

भिलाई। बकायादारों से कर वसूली के लिए रिसाली निगम ने सख्ती शुरू कर दी है। गुरूवार को निगम ने 38 बकायादारों के नाम को सार्वजनिक किया है। इसके अलावा 34 लाख 98 हजार 688 रुपये वसूल करने 23 लोगों के खिलाफ कुर्की आदेश जारी किया है। निगम ने इस साल नौ करोड़ 66 लाख रुपये का लक्ष्य रखा है। जिसमें अब तक छह करोड़ 57 लाख रुपये की वसूली की जा चुकी है।

रिसाली निगम आयुक्त आशीष देवांगन ने समय पर संपत्ति व अन्य कर जमा नहीं करने वालों पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इस आदेश के बाद राजस्व विभाग ने पहले 38 लोगों की सूची जारी की है। जिन्होंने समय पर कर जमा नहीं किया है। राजस्व विभाग के संजय वर्मा ने बताया कि 23 लोगों के खिलाफ कुर्की नोटिस जारी किया गया है। औपचारिकता पूरी कर जल्द ही कुर्की कर पेनाल्टी समेत राशि वसूल की जाएगी।

उन्होंने बताया कि इस्पात नगर निवासी हरभजन सिंह, मैत्रीनगर निवासी नवीन कुर्की सिंह, प्रवीण कुमार सिंह, एसपी झा, कमला देवी दुबे, परदेश कुमार साकेटकर, महावीर चंद्रशेखर, सड़क 20 रिसाली नवीन जैन, मेन रोड स्टेशन मरोदा निवासी पुषा वर्मा, आजाद मार्केट प्रगति नगर के बीएस यादव, प्रगति नगर के बीआर पटेल, एसएन उजवने, प्रगतिनगर होरी आटो लाइन कामेश्वर राव, प्रगतिनगर बसंत राम भट्ट, आजाद मार्केट प्रगति नगर अंजू चैधरी, फोटो देवी, गंगा देवी, आशीष नगर रिसाली के राम सिंह, ढोल चौक रिसाली बस्ती के बगस करमाकर, आजाद मार्केट के ढेलू राम यादव, हीरालाल यादव व मैत्रीकुंज के विजय बहादुर के खिलाफ कुर्की आदेश जारी किया गया है।

38 बकायादारों का नाम सार्वजनिक

इसके अलावा जिन 38 बकायादारों का नाम सार्वजनिक किया गया है। इनमें मैत्रीकुंज निवासी अशोक वोहरा, आरपी मिश्रा, नवीन कुमार सिंह, प्रवीण सिंह, सुशीला जैन, प्रियंका नगर निवासी सुरजीत परिमाल, न्यू मार्केट स्टेशन मरोदा के गणेश व प्रमोद चैधरी, ओंकारनाथ कश्यप, नहर के सामने स्टेशन मरोदा रामलदत एवं रामचरण गुप्ता, कृष्णा साव, रामाशंकर वर्मा, लालता प्रसाद चौके के मोतीलाल ब्रदर्स, एचएससीएल कालोनी स्टेशन मरोदा के अर्जुन साव, मौहारी मरोदा के बलराम त्रिपाठी, बीरेंद्र कुमार व अशोक यादव, रामप्रकाश यादव, टंकी मरोदा के भारत यादव, मरोदा टंकी के रजिया बेगम, राममूरत यादव, मनगुरु विश्वकर्मा, राजेश सिंह, रूआबांधा के संतोष यादव, आर्यवत एकेडमी के संध्या पांडेय, आजाद मार्केट रिसाली के ढेलू राम यादव, हीरालाल यादव, लाल बहादुर पांडेय, विनोद कुमार वर्मा, बीएस यादव व बुनिया देवी, प्रगतिनगर के शंकर लाल बंजारे, सूफी अब्दुल रशीद, विनय कुमार जैन, आशीष नगर वेस्ट कमल सोनी, जैन फार्म हाउस रचना जैन व अन्य तीन आदि हैं।

छिलाई के लिए दिया जेवर, कारीगर लेकर हुआ फरार

दुर्ग। दुर्ग के सराफा कारोबारी को जेवर बनाने वाले कारीगर ने चूना लगा दिया। सराफा कारोबारी ने 24 नग हार और एक जोड़ी झुमका छिलाई के लिए एक कारीगर को दिया था। आरोपित कारीगर पूरे जेवर लेकर फरार हो गया। घटना की शिकायत पर दुर्ग कोतवाली पुलिस ने आरोपित के खिलाफ अमानत में खयानत की धारा के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने बताया कि वार्ड 33 ब्राह्मण पारा सदर बाजार दुर्ग निवासी प्रसेनजीत भौमिक की पीयूष ज्वेलर्स नाम की दुकान है। उसने 16 जनवरी की सुबह 24 नग हार और एक जोड़ी झुमका को छिलाई के लिए एक बाबू उर्फ शेख मिनहाजुद्दीन की दुकान पर दिया था। बाबू उर्फ शेख मिनहाजुद्दीन ने उक्त जेवर को अपने यहां काम करने वाले कारीगर आरोपित शेख इजाजुल हक निवासी जोलामादुल पुकपारा थाना चंडीतला जिला हुगली कोलकाता पश्चिम बंगाल को दिया था। आरोपित शेख इजाजुल हक उसी रात को सभी जेवर लेकर फरार हो गया। कारीगर बाबू उर्फ शेख मिनहाजुद्दीन ने शिकायतकर्ता प्रसेनजीत भौमिक को इसके बारे में बताया। इसके बाद दोनों ने मिलकर आरोपित के बारे में पतासाजी की। वे दोनों उसके गांव कोलकाता भी गए। लेकिन, आरोपित का कोई सुराग नहीं मिला। शिकायतकर्ता ने दुर्ग कोतवाली थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई।

रायपुर के रवि भवन में पुलिस की रेड

एप्पल ब्रांड के नकली मोबाइल ऐसेसिरीज का जखीरा मिला, तीन कारोबारी गिरफ्तार

रायपुर (ए)। गुरुवार को रायपुर पुलिस ने रवि भवन, मोबाइल मार्केट में छापा मारा। यहां पर कई दुकानों की सर्चिंग की गई। इस दौरान तीन दुकानों से एप्पल ब्रांड के नकली मोबाइल एसेसिरीज बरामद किए गए हैं, इनमें नकली यूएसबी, चार्जर, मोबाइल कवर जैसी चीजें शामिल हैं। इस मामले में तीन कारोबारियों को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस ने बताया कि राजस्थान से एक एजेंसी में गोल बाजार थाने में शिकायत दर्ज करवाई थी कि रायपुर के कुछ कारोबारी एप्पल ब्रांड के नकली सामान बेच रहे हैं। इसी की जांच गुरुवार को पुलिस ने की। रवि भवन जाकर के कारोबारियों के खिलाफ पुलिस ने राजस्थान की एजेंसी के संदीप तंवर की शिकायत पर कॉपीराइट एक्ट के तहत केस दर्ज किया है।

इन पर हुई कार्रवाई

पुलिस की टीम में एसकेआर मोबाइल एसेसिरीज की दुकान में जाकर पूछताछ की। दुकान के मालिक पर रितेश कुमार अंदानी ने के पास से 295 नकली मोबाइल बैक कवर मिले। पावर होलसेल मोबाइल एक्सप्रेस नाम की दुकान में विनय कृष्णानी के पास से 350 नकली बैक कवर, इयरपॉड्स, लाइटिंग कंटेनर बरामद किए गए। नितेश खत्री नाम के कारोबारी के पास से एप्पल के नकली यूएसबी केबल एडेप्टर 107 नकली यूएसबी केबल एडॉप्टर बरामद किए गए। 1 लाख 70 हजार 390 का नकली सामान बरामद किया गया है।

स्कार्पियो और पिकअप में जोरदार टक्कर, जनपद पंचायत सदस्य का हाथ टूटा, सीईओ घायल

गौरेला (ए)। शहर के फ्लाईओवर पर बुधवार की शाम स्कार्पियो और पिकअप में जोरदार टक्कर हो गई। दौरे पर निकले जनपद के अधिकारी व सदस्य घटना में घायल हो गए। उन्हें एंबुलेंस से अस्पताल दाखिल कराया गया।

मिली जानकारी के अनुसार गौरेला जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी जसपाल सिंह अपने ड्राइवर व जनपद सदस्य गणेश मार्को के दौरे पर निकले थे। वे पतर्कोनी से स्थल निरीक्षण कर सारबहरा स्मृति वन निरीक्षण के लिए जा रहे थे। बताया जाता है कि इसी दौरान ओवर ब्रिज के बीच पहुंचते ही केडिया पेट्रोल पंप की तरफ से आ रही तेज रफ्तार पिकअप ने उनकी स्कार्पियो को सामने से टक्कर मार दी। दुर्घटना में गौरेला जनपद पंचायत सदस्य गणेश मार्को और सीईओ जसपाल सिंह दोनों को गंभीर चोट आई है।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक निर्माण विभाग दुर्ग संभाग, दुर्ग

// मैन्युअल पद्धति निविदा सूचना //

ज्ञाप क्रमांक - 3433/ व.ले.लि. / लेखा खण्ड / 2021-22   दुर्ग, दिनांक 21.02.2022

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु प्रमुख अभियंता, लो.नि.वि. रायपुर द्वारा जारी भवन/सड़क SOR दिनांक 01.01.2015 तथा निविदा तिथि तक जारी संशोधन के अंतर्गत मैनुअल निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि :- 05.03.2022 अपरान्ह 5.30 बजे तक
निविदा प्रपत्र जारी करने की अंतिम तिथि :- 08.03.2022 अपरान्ह 5.30 बजे तक
ठेकेदारों द्वारा प्रस्तुत निविदायें प्राप्त करने की अंतिम तिथि :- 15.03.2022 अपरान्ह 5.30 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि :- 16.03.2022 पूर्वान्ह 11.30 बजे से

एनआईटी क्र. निविदा क्र.	कार्य का नाम / No of Calls	कार्य की अनुमानित लागत (रू. लाख में)
1	2	3
29 T0410	दुर्ग में कमीश्नर कार्यालय भवन का निर्माण कार्य (प्रथम आमंत्रण)	19.93

☐ General Condition   ☐ Plant Condition   ☐ Special Condition

नोटः- (1) " It is mandatory for the "B", "C", & "D" Class bidders, to submit (Annexure 3, Annexure- "2"
(2) It is Mandatory for the "A" Class bidder, to submit affidavit (Annexure 3, Appendix 1, Annexure 1,2.
(3) अन्य निविदा संबंधी शर्तें विभागीय वेबसाईट www.cg.nic.in/pwdraipur में Live Tender के अंतर्गत निविदा प्रपत्र में उपलब्ध है। एवं अन्य निविदा संबंधी शर्तों का अवलोकन संबंधित संभाग कार्यालय में किया जा सकता है।

जी-68135/4

कार्यपालन अभियंता
लोक निर्माण विभाग दुर्ग संभाग दुर्ग

नये लुक एवं वैरायटी में सागौन लकड़ी द्वारा निर्मित
अरिहंत फर्नीचर शो रुम | नमन सेल्स फर्नीचर शो रुम
20% डिस्काउंट के साथ उपलब्ध
• सागौन निर्मित इंडियन मॉडल, वॉल मॉडल, डी मॉडल गुजराती सोफा
• लकड़ी सोफा 9500/- से शुरू (वारंटी के साथ)
• लकड़ी पलंग हाई क्वालिटी के साथ
• स्टील आलमारी आटोमेटिक प्लांट द्वारा निर्मित, मट्टी पेंट वाली
• कम्प्यूटर टेबल, ऑफिस टेबल, डेसिंग टेबल कम्प्यूटर चेयर ऑफिस चेयर इत्यादि की वैरायटी
आजाद मार्केट, रिसाली
(भिलाई मसाला उद्योग के पीछे), भिलाई, मो. 9424151009, 9301188428

Authorised For : SOMANY Wall & Floor Tiles
All Size of Tiles, Granite and Sanitaries
SHRI BALAJI TILES
Krishna Talkies Road, SBI Building, Opp. Church, Risali, Bhilai-490006 Distt.-Durg (C.G.), Mo.-9518326808
E-mail:- balajitilescg@gmail.com

आदित्य ड्राई क्लीनर्स
Pick & Drop Service Available (Terms & Condition Applied)
98271-90875 99938-08453 75877-57239
सोफा पर्दा कारपेट सीटकवर लेदर जैकेट टेड्डी वियर शू
सभी प्रकार के कपड़ों का आधुनिक तकनीकी से ड्राईक्लीन किया जाता है।
Shop NO.-105, "A" Market, Sector-6, Bhilai (C.G.)

दुल्हन बैंगल्स & फैंसी
RUPESH KUMAR Mob.-9840760388 7987759030
Specialist : Wedding mix match bangles, Glass bangle, Plastic bangle. Saree pin, Bindi, Rubber Band. Bracelet, Butter Fly, Ear ring and many more
कृष्णा टाकिज रोड, विजय भवन के पास, रिसाली, भिलाई
जलाराम मिष्ठान के सामने, इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्ग (छ.ग.)

Galaxy Granite
WholeSaler & Retailer
रायपुर से कम दामों में
All Type Of Tiles : Wall Tiles, Floor Tiles, Granite Sanitary & Null Fitting
सभी प्रकार के टाईल्स और ग्रेनाईट मिलने का एक मात्र स्थान कोई भी टाईल्स लेने से पहले एक बार अवश्य पधारे...
Raja Steel Traders, Krishna Talkies, Road, Side of ZEE Maha Sale, Risali, Bhilai - 490006
K.K. Soni - 77479-88643, 9109509095

राकेश ट्रेडर्स
विगत 6 वर्षों से यह दुकान पानी टंकी के सामने स्थानांतरित हो गई है।
Dealers
Marbles, Grinight, Black Stone, Nano & Double Charge Verified Tiles Digital Wall & Floor Tiles Cement Coloru etc.
रायपुर रेट पर माल उपलब्ध Rakesh Sahu 9302443750, 9907127357
Krishna Talkies Road, Beside Hariom Furniture, Risali, Bhilai - 490006

MemSaheb Ladies wear
JOCKEY UNDERWEAR IS OUR PASSION
JULIET
Shop No. 57, A Market, Sec-6 Bhilai
Om Prakash 9926004441, 0788-2284341

भिलाई मसाला उद्योग
शुद्ध कुटे हुए मसाले, पापड़, अचार, बड़ी, जड़ी-बूटी, जचकी का सामान इत्यादि
128, ए- मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई, फोन. 2284508, मो. 9826137766

House of tiles
Complete Range of Tiles, Marble And Granite in One Shop
KESWANI TILSE
कृष्णा टाकिज रोड, राजा स्टील के सामने, रिसाली, भिलाई (छ.ग.)
Mo. _- 82349 - 21000

मिस एंड मिसेस लेडिस वेयर
• गाऊन • ब्रा. पेन्टी • नाईटी • ब्लाउज
सभी प्रकार के अंडरगारमेंट्स की विशाल रेंज
शॉप नं-113, सेक्टर-6, ए मार्केट भिलाई

न्यू अप्सरा साड़ी सेन्टर
घाघरा, चुन्नी, कुर्ती, डिजाइनर साड़ियां सलवार सूट
सेल्स गर्ल की आवश्यकता है
शॉप 151, ए-मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई, फोन-2284063

माँ दुर्गा ज्वेलर्स
सोने एवं चांदी के आभूषणों विक्रेता
उचित ब्याज में गिरवी रखी जाती है
शॉप नं. 69, सी-मार्केट सेक्टर-6, भिलाई मो. 9424124911

भारतीय बैग हाउस
फैंसी स्ट्राली, स्कूल बैग, ऑफिस बैग, सफर बैग, लेपटॉप बैग, फैंसी छतरी, रेनकोट इत्यादि के विक्रेता
VIP happy journey
AMERICAN TOURISTER
कृष्णा टाकीज रोड, बैंक ऑफ बडौदा के बाजू में रिसाली भिलाई, संजय गुप्ता: 93003-77572

खास - खबर

सामुदायिक शौचालय की साफ - सफाई न रखने पर नोटिस के बाद ठेका किया रद्द

दुर्ग। नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत वार्ड 34 शिवपारा चंडी मंदिर स्थित सामुदायिक शौचालय के संचालक द्वारा देखभाल नही करने पर और उन्होंने शौचालय में साफ-सफाई नहीं किया तो परिसर में आने जाने वाले नागरिकों व रहवासियों को दुर्गंध से परेशान होना पडता है।जिस पर पार्षद एवं वार्ड नागरिको द्वारा सामुदायिक शौचालय का संचालनकर्ता द्वारा रख रखाव का कार्य सुचारू रूप से संपादित नही किये जाने की निरन्तर शिकायत मिलने पर निगम आयुक्त हरेश मंडावी ने सामुदायिक शौचालय का अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया गया,निरीक्षण के दौरान शौचालय की संपूर्ण व्यवस्था असंतोषजनक पाई गई। नोटिस के माध्यम से स्वच्छ्ता श्रृंगार योजना के अंतर्गत नियम शर्तो का उल्लंघन करने के कारण संचालनकर्ता मेमोरियल स्व सहायता समूह वार्ड 41 केलाबाड़ी के संचालक द्वारा नोटिस आदेश का जवाब समाधानकारक नही होने के कारण अनुबंध तत्काल प्रभाव से निरस्त किया गया। निगमायुक्त मंडावी ने कहा सामुदायिक शौचालय संचालको सभी अपने शौचालय परिसर समेत अन्य व्यवस्थाओं के अलावा विशेष साफ-सफाई रखें, शिकायत या भ्रमण के दौरान रखरखाव सही नही पाए जाने पर शौचालय निरस्तीकरण की कार्रवाही की जाएगी।

दिव्यांग के आवेदन पर कलेक्टर ने तत्काल उपलब्ध कराई बैटरी चलित ट्रायसायकल

दुर्ग। कलेक्टोरेट में दिव्यांग दिलीप कुमार सूर्यवंशी और उनकी पत्नी श्रीमती मोहनी सूर्यवंशी ने कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे से बैटरी चलित ट्रायसायकल और पत्नी के लिए स्कूटी योजना के लाभ के लिए आवेदन किया गया। आवेदन के पश्चात कलेक्टर ने तुरंत ही बैटरी चलित ट्रायसायकल प्रदान किया। साथ ही उसकी पत्नी के लिए स्कूटी योजना हेतु आवेदन देने निर्देशित किया गया। इस अवसर पर समाज कल्याण विभाग के उपसंचालक दोनर प्रसाद ठाकुर भी उपस्थित थे। दोनों को शासन के द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन का भी लाभ मिल रहा है। वे दोनों अपना जीवनयापन छोटे से व्यवसाय कर गुजरा करते है। इस मौके पर कलेक्टर ने उपसंचालक दोनर प्रसाद ठाकुर को निर्देशित किया कि सामाजिक सुरक्षाओं का लाभ अधिकाधिक हितग्राहियों को पहुंचे यह सुनिश्चित करें।

दुर्ग जिले में राष्ट्रीय संधन पल्स पोलियो अभियान 27 से

दुर्ग। राष्ट्रीय संधन पल्स पोलियो अभियान की समस्त तैयारियां कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे के निर्देशन में पूरी कर ली गई है। कलेक्टर ने जिले के नागरिकों से अपील की है कि पोलियो मुक्त राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करने सभी अपनी संकल्पित सहभागिता प्रदान करें। यह सुनिश्चित करें कि उनके घर एवं आसपास के 0-5 वर्ष के सभी बच्चों ने पोलियो की दो बूंद खुराक पी ली है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि पोलियो का वायरस केवल मनुष्यों में पाया जाता हैं। अत: इसका प्रसार भी बच्चों से बच्चों में होता है। यह प्रभावित बच्चों की अतड़ियों में पलता बढ़ता है एवं मल उत्सर्जन एवं इसके द्वारा खाने पीने की चीजों के दूषित होने से मुंह के माध्यम से 0-5 वर्ष तक के बच्चों को प्रभावित करता है। केवल दो बूंद पोलियो की खुराक से इस बीमारी से बच्चा पूर्णत: सुरक्षित रहता है। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. दिव्या वास्तव द्वारा जानकारी दी गई कि इस अभियान के लिए कुल 2.50 लाख बच्चे एवं 3.05 लाख घरों का लक्ष्य रखा गया है। इस संबंध में लगभग 4 हजार अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जिम्मेदारी दी गई है। राष्ट्रीय सघन पल्स पोलियों अभियान के शत-प्रतिशत सफलता हेतु जिले के समस्त विकास खंड में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं मितानिनों को पल्स पोलियो अभियान का प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया गया है।

पाउवारा को मिली करोड़ों की सौगात

साधन और सुविधा से ही लक्ष्य की होती है प्राप्ति-मंत्री ताम्रध्वज साहू

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। दुर्ग ग्रामीण विधानसभा के अंतर्गत ग्राम पाउवारा के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में गुरुवार को 60 लाख की लागत विज्ञान वाटिका एवं सवा करोड़ की लागत से बनने वाली नवनिर्मित विद्यालय भवन का लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू थे।

अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष शालिनी यादव ने की। विशेष अतिथि युवा आयोग अध्यक्ष जितेंद्र मुदलियार जिला पंचायत सभापति योगिता चंद्राकर जनपद पंचायत उपाध्यक्ष झमित गायकवाड़ प्रदेश पूर्व जिला पंचायत सदस्य केशव बंटी हरमुख शाला विकास समिति सरक्षक उत्तम हिरवानी विधायक प्रतिनिधि भीषम हिरवानी जनपद पंचायत सभापति राकेश हिरवानी समाजसेवी हर्ष साहू सरपंच वामन साहू थे। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के तैल चित्र पर माल्यार्पण कर पूजा अर्चना से हुई उसके बाद मुख्य अतिथि ने विज्ञान वाटिका एवम नवनिर्मित भवन का लोकार्पण कर छात्राओं ने विज्ञान प्रदर्शनी रखा था उनका अवलोकन किया। स्कूली छात्राओं द्वारा स्वच्छता पर आधारित नुक्कड़ नाटक,सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिनका उपस्थिति जनों द्वारा सराहना की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ताम्रध्वज साहू ने कहा की साधन और सुविधा से ही लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती इसलिए सुविधा दी जाती है। ग्राम का विकास में ही ग्रामवासियों के सहयोग की आवश्यकता है। जन सहभागिता से बड़े बड़े विकास कार्य को अंजाम दिया जा सकता है। विकास के लिए मानसिक रूप से जुड़ाव होनी चाहिए तभी किसी कार्य की सार्थकता है। विकास कार्य को सजाना संवारना ग्रामवासियों का भी कार्य है। विकास सतत प्रक्रिया है। बच्चों को संस्कार की शिक्षा देनी चाहिए तभी मनुष्यता का निर्माण की जा सकती है। शिक्षा और संस्कार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। शिक्षा मनुष्य के जीवन का अनमोल उपहार है जो व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल देती है और संस्कार जीवन का सार है जिसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता है। कार्यक्रम को अन्य अतिथियो ने भी संबोधित किया। प्राचार्य सुनील यादव द्वारा शाला प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।सरपंच वामन साहू द्वारा अंडा पाऊवारा उतई तक बस सेवा शुरू किए जाने की मांग रखा गया।

विधायक के प्रयासों से प्रारंभ हुई 1.6 करोड़ की वायरोलॉजी लैब

लाभान्वित होगी जिले भर की आबादी जल्द शुरू होगा हमर लैबः वोरा

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। कोविड संक्रमण के तीन दौर देखने के साथ साथ दुर्ग जिला मुख्यालय में वरिष्ठ कांग्रेस विधायक अरुण वोरा के लगातार प्रयासों से स्वास्थ्य सुविधाओं में भी लगातार विस्तार किया जा रहा है। पहली एवं दूसरी लहर के दौरान टेस्ट रिपोर्ट आने में विलंब को देखते हुए वोरा ने शहर में ही टेस्टिंग लैब की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री से मुखर हो कर मांग की थी।

जिसके परिणाम स्वरूप जिले के सबसे बड़े अस्पताल में लैब बनाने की शुरुवात एक वर्ष पूर्व की गई थी। लोनिवि द्वारा 50 लाख की लागत से भवन निर्माण कार्य कराए जाने के बाद भी लैब इक्विपमेंट की कमी के कारण टेस्टिंग प्रारंभ नहीं कि जा सकी थी जिसके बाद उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंहदेव एवं सीजीएमएससी के अधिकारियों से लगातार संपर्क बनाए रखते हुए टेस्टिंग के लिए आवश्यक 1.10 करोड़ के उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करवाई।

स्वास्थ्य मंत्री द्वारा विधायक वोरा एवं कलेक्टर सर्वेश्वर भूरे की उपस्थिति में किए गए वर्चुअल लोकार्पण के दौरान मंत्री सिंहदेव द्वारा भी वोरा के प्रयासों की सराहना की गई। श्री वोरा ने कहा कि अब वायरोलॉजी लैब शुरू होने से कोरोना की तीन तरह की जांच त्वरित रूप से हो सकेंगी जिससे दुर्ग शहरी क्षेत्र समेत जिले के आसपास के सभी लोगों को लाभ होगा। 500 बिस्तर युक्त जिले के सबसे बड़े अस्पताल में ईलाज की बेहतर सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए लगातार प्रयास जारी है।

पानी फिल्टरेशन की प्रक्रिया की जानकारी लेने के बाद निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे ने स्पॉट में ही पानी पीकर किया टेस्ट

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। निगमायुक्त प्रकाश सर्वे ने 77 एमएलडी जलशोधन संयंत्र का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने फिल्टर बेड, फ्लोकूलेटर, एरीएशन चेंबर, वाश वाटर एवं जल शोधन संयंत्र के अन्य स्थानों में पहुंचकर जल शुद्धिकरण के लिए अपनाए जा रहे पूरे कार्यों से अवगत हुए। जल शुद्धीकरण की प्रत्येक प्रक्रियाओं का जायजा लेते हुए, निगम क्षेत्र के हर वार्ड में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था निरंतर बनी रहे इसके लिए उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए।

फिल्टर प्लांट के लैब में पहुंचकर केमिस्ट से चर्चा की। उन्होंने स्वयं पानी पीकर टेस्ट किया। कर्मचारियों की उपस्थिति पंजी का भी उन्होंने जायजा लिया। उन्होंने जल की शुद्धता के लिए किए जाने वाले जांच से संबंधित पंजी को दूरूस्त रखने के निर्देश दिए। शिवनाथ नदी से आने वाले पानी से लेकर डिस्ट्रीब्यूशन वाटर के सैंपल तक की प्रक्रिया की जानकारी निगम आयुक्त ने ली। उन्होंने निर्देश दिए कि जल शुद्धिकरण के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले संसाधनों जैसे क्लोरीन, ब्लीचिंग एवं अन्य संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहे। वाटर टेस्टिंग लैब में पहुंचकर संधारित पंजियों का तिथि अनुसार अवलोकन किए। आयुक्त ने प्रतिदिन पानी टंकी और अंतिम छोर के जल स्त्रोत से लिए जाने वाले सेम्पल के पानी टेस्टिंग की रिकॉर्ड व्यवस्थित करने कहा। जलशोधन संयंत्र में साफ सफाई बनाए रखने और मोटर पंप, इलेक्ट्रिानिक पैनल्स आदि उपकरण की समय-समय जांच व संधारण संबंधी जानकारी ली।

उल्लेखनीय है कि महापौर नीरज पाल पेयजल सुचारु रूप से जारी रहे और अमृत मिशन के तहत बिछाई गई पाइप लाइन से हर घर पानी पहुंचे इसके लिए लगातार अधिकारियों को निर्देशित कर रहे है, वहीं जल कार्य विभाग के प्रभारी केशव चौबे भी पेयजल की व्यवस्था को लेकर शहर में सक्रिय है। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के नागरिकों को शुद्ध पेयजल प्रदाय किया जा सके इसके लिए जलकार्य विभाग की टीम पूरी मुस्तैदी से अपने कार्य में जुटी हुई है।

वोरा ने मुख्यमंत्री से यूक्रेन में रहकर पढ़ाई करने वाले भिलाई सहित पूरे छत्तीसगढ़ के बच्चों की सुरक्षित वापसी की व्यवस्था करने की अपील

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। भिलाई से मेडिकल की पढ़ाई करने यूक्रेन पहुंचे स्टूडेंट्स भारी दहशत के बीच फंसे हैं। भिलाई में अपने माता पिता से लगातार बातचीत चल रही है। मिसाइलों से दहलते यूक्रेन में रहने वाले स्टूडेंट्स ने बताया कि वे हास्टल में रहते हैं। आज सुबह रूस के हमले के बाद लगातार धमाके हो रहे हैं। चारों तरफ अफरा तफरी का माहौल है। सुरक्षा के लिए अंडरग्राउंड मेट्रो ट्रेन के नीचे छिप कर रहना पड़ रहा है। यूक्रेन सरकार द्वारा सुरक्षा और साइबर अटैक के मद्देनजर उनके मोबाइल भी बंद कराए जा रहे हैं।

भिलाई के मॉडल टाउन निवासी मेडिकल स्टूडेंट दीप्ति पांडे व अन्य स्टूडेंट्स ने आज अपने पिता अशोक पांडेय से फोन पर बातचीत की। दीप्ति सहित भिलाई से चार छात्राएं यूक्रेन में एमबीबीएस की पढ़ाई करने आई हैं। रूस के हमले के बाद वे खुद को असुरक्षित महसूस कर रही हैं। उन्हें लेने के लिए एयर इंडिया का एक प्लेन आया था लेकिन एयरपोर्ट पर मिसाइल अटैक होने के बाद प्लेन लौट गया। सरकार ने बाहर आने जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

दीप्ती ने बताया कि हमले से बचाव के लिए काफी लोग अंडरग्राउंड मेट्रो में चले गए हैं। वे फिलहाल हास्टल में रह रही हैं, लेकिन स्थानीय प्रशासन ने उन्हें बैग, पानी की बोतल सहित अन्य सामान तैयार रखने कहा है। उन्हें भी सुरक्षा के लिए अंडरग्राउंड मेट्रो में जाने के लिए तैयार रहने कहा गया है।

बिलासपुर से पढ़ने गए छात्र अभिषेक कुमार ने बताया कि यूक्रेन में सुबह 5 बड़े धमाकों से लोग दहल उठे। वे कितने सुरक्षित हैं, इस बारे में कह नहीं सकते। सुपर मार्केट में राशन और जरूरी चीजें लेने वालों की भीड़ लगी है। इसके अलावा बैंकों में भी पैसा निकालने के लिए लंबी लाइनें लगी हैं।

मुख्यमंत्री से मदद की अपील की

दीप्ति के पिता अशोक पांडेय ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से यूक्रेन में पढ़ाई करने पहुंचे बच्चों की सुरक्षा के लिए पहल करने की अपील की है। पांडेय ने बताया कि रूस के हमले की खबर के बाद से उनका परिवार बेहद चिंतित है। इस संबंध में तत्काल मदद मिलनी चाहिए। पांडेय ने तीन दिन पहले विधायक अरुण वोरा से भी इस संबंध में मुलाकात की थी। वोरा ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से अपील करते हुए कहा है कि छत्तीसगढ़ से यूक्रेन जाकर पढ़ाई करने वाले सभी स्टूडेंट्स की सुरक्षा और उनकी सकुशल वापसी सुनिश्चित करने उच्च स्तरीय पहल करें।

राज्य सरकार ने यूक्रेन से संबंधित मुद्दों पर राज्यवासियों की मदद के लिए नियुक्त किया नोडल अधिकारी

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के निर्देश पर राज्य सरकार द्वारा दो दिनों पहले ही यूक्रेन से संबंधित मुद्दों पर छत्तीसगढ़ के लोगों की मदद के लिए नई दिल्ली स्थित छत्तीसगढ़ भवन में सम्पर्क अधिकारी गणेश मिश्र को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। श्री मिश्र से दूरभाष नम्बर 01146156000, मोबाइल नम्बर +91-9997060999 और फैक्स क्रमांक 01146156030 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

राशन कार्ड बनवाने के लिए 1092 आवेदन अब तक आए नए राशन कार्ड बनवाने 2 दिन का समय शेष

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र अंतर्गत एपीएल एवं बीपीएल परिवारों का राशनकार्ड बनाया जा रहा है, इसके लिए नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र में वार्डों में शिविर का आयोजन किया जा रहा है, शिविर में छूटे हुए लोग नया राशन कार्ड बनाने, नाम जोड़ने, नाम सुधार एवं पेंडिंग राशन कार्ड का निराकरण करा रहे हैं।

महापौर नीरज पाल ने शिविर में अधिक से अधिक लोगों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए है। वार्डों में लगे शिविर का निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे स्वयं निरीक्षण कर रहे हैं। राज्य शासन की मंशा के अनुक्रम में निगम क्षेत्रान्तर्गत छुटे हुए परिवार का नवीन एपीएल/बीपीएल राशनकार्ड बनवाने हेतु दिनांक 21 से 26 फरवरी 2022 तक विभिन्न वार्डों में शिविर का आयोजन किया जा रहा है, शिविर में अब तक 1092 आवेदन प्राप्त हो चुके है। किसी कारण से राशनकार्ड बनवाने से छुटे हुए परिवार शिविर स्थल में आवेदन जमा कर राशनकार्ड बनवा सकते है। जिला खाद्य शाखा से जारी पत्र के अनुसार राशनकार्ड बनाने हेतु लंबित आवेदनों की नियमित समीक्षा के तहत भौतिक सत्यापन एवं पात्रता की जांच कर आगामी कार्यवाही की जाएगी। छ.ग. खाद्य एवं पोषण सुरक्षा अधिनियम, 2012 एवं छ.ग. राशनकार्ड नियम 2016 के तहत नवीन राशनकार्ड जारी किये जाने के निर्देश के तहत शिविर लगाई गई है। निगम के नोडल अधिकारी एन आर रत्नेश ने जानकारी देते हुए बताया कि राशन कार्ड बनाने के लिए तथा लंबित आवेदन का शीघ्र निराकरण करने एवं एपीएल/बीपीएल राशनकार्ड बनाने के लिए नया आवेदन लिया जा रहा है।

अब तक शिविर में 1092 आवेदन - एपीएल एवं बीपीएल राशनकार्ड बनवाने के लिए निगम क्षेत्र के वार्डों में लग रहे शिविर में अब तक 1092 आवेदन प्राप्त हो चुके है। इसमें नये एपीएल राशनकार्ड के लिए 506, बीपीएल राशनकार्ड के लिए 424, पूर्व में बन चुके राशनकार्ड में नये सदस्यों का नाम जुड़वाने 153 तथा राशनकार्ड हितग्राही के नाम संशोधन कराने के लिए 9 लोगों सहित कुल 1092 आवेदन शिविर के माध्यम से प्राप्त हुए है जिन पर अग्रिम कार्यवाही की जाएगी। वार्डों में आयोजित हो रहे शिविर में प्राथमिकता एवं अंत्योदय वाले नए राशनकार्ड बनाने के लिए हितग्राही के लिए आवश्यक दस्तावेज के साथ आवेदन किया जाएगा। वहीं सामान्य एपीएल राशनकार्ड बनाने के लिए आधार कार्ड, वोटर आईडी कार्ड एवं दो पासपोर्ट फोटो आवश्यक है। इसके अतिरिक्त शिविर स्थल पर अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सोहम प्रोजेक्ट करेगी दुर्ग में पहले स्मार्ट सिटी के सपनों को साकार

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। दुर्ग के रहवासी अब स्मार्ट सिटी का जलवा देखेंगे और उसकी सुविधाओं का भी लाभ उठाएंगे। इस सपने को साकार करने रियल स्टेट की नामी संस्था ऋषभ बिल्डर्स ने भव्य प्रोजेक्ट तैयार किया है।

जिसके लिए शिवनाथ नदी के किनारे नेशनल हाईवे पर स्थित ग्राम महमरा का चयन किया गया है। इस स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट को सोहम का नाम दिया गया है। सोहम अर्थात् आत्मा को प्रकृति और पर्यावरण से जोड़ने वाली। इस माहौल में हर कोई व्यक्ति अपने सपनों का घर चाहता है। यह स्मार्ट सिटी 18 एकड़ क्षेत्र में बनकर तैयार होगा। जिसमें 413 सर्वसुविधायुक्त मकान के निर्माण के अलावा मकान व परिसर को स्मार्ट सिटी बनाने वाली सारी सुविधाओं का समावेश होगा। दुर्ग की इस पहली स्मार्ट सिटी सोहम की 26 व 27 फरवरी को भव्य लांचिंग की जाएगी। जिसके ब्रोसर का ऋषभ बिल्डर्स के डायरेक्टरों ने गुरुवार को विमोचन किया। इस दौरान ऋषभ बिल्डर्स के डायरेक्टर अभिलेष कटारिया, ऋषभ कटारिया, बसंत कटारिया, मुकेश गोलछा, मुकुंद कुमार मौजूद थे। मीडिया से चर्चा में ऋषभ बिल्डर्स के डायरेक्टर अभिलेष कटारिया ने बताया कि ऋषभ बिल्डर्स रियल स्टेट के क्षेत्र में सन1997 से कार्य कर रही है। ग्राहकों के विश्वास के भरोसे अब तक 15 प्रोजेक्ट पूरे किए जा चूके है।

ओबीसी सर्वेक्षण में पार्षदों का सहयोग आवश्यक - सीएस पटेल

-सर्वेक्षण की तिथि, बढ़ी 30 मार्च तक नाम जुड़वाने का मिल रहा है मौका

-पार्षदों ने सर्वेक्षण के दौरान फील्ड में आई व्यवहारिक दिक्कतो से आयोग को कराया अवगत, आयोग ने समस्यायों का बताया समाधान

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। नगर पालिक निगम भिलाई के सभागार में अन्य पिछड़ा वर्ग एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के सर्वे में इसके क्राइटेरिया में आने वाले सभी लोगों को

जोड़ने के लिए और इससे कोई भी परिवार एवं सदस्य न छूटे इसके लिए क्रांटीफिएबल डाटा आयोग के अध्यक्ष सी. एस. पटेल एवं सचिव बी.सी. साहू ने पार्षदों के साथ बैठक की। इस दौरान महापौर नीरज पाल एवं निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे विशेष रुप से बैठक में मौजूद रहे। सर्वेक्षण के दौरान सर्वे दल द्वारा फील्ड में आई हुई परेशानियों को कैसे दूर किया जा सकता है इस पर आयोग ने सभी पार्षदों से सुझाव मांगे। पार्षदों में भोजराज सिन्हा, पियूष मिश्रा, महेश वर्मा, वशिष्ठ नारायण मिश्रा, रिकेश सेन, जोन अध्यक्ष भूपेंद्र यादव, पार्षद राजेंद्र प्रसाद, योगेश साहू, स्मिता दोडके, हरिओम तिवारी ने आयोग को सर्वेक्षण के दौरान व्यवहारिक रूप से होने वाली परेशानियां एवं इसे किस प्रकार से दूर किया जा सकता है इसके सुझाव दिए। पार्षदों द्वारा दिए गए सुझाव एवं चाही गई जानकारी से आयोग ने सभी को अवगत कराया और बताया कि ओबीसी सर्वेक्षण के लिए यदि डॉक्यूमेंट उपलब्ध नहीं होते हैं तो केवल मोबाइल नंबर के आधार पर इनकी एंट्री की प्रक्रिया की जा सकती है, साक्ष्य के रूप में दस्तावेज देना आवश्यक नहीं है, वहीं उन्होंने कहा कि 30 मार्च तक सर्वेक्षण की तिथि बढ़ाई गई है इसके पीछे शासन की मंशा यह है कि इसके दायरे में आने वाले प्रत्येक परिवार एवं उनके सदस्य का सर्वेक्षण सूची में नाम शामिल करना है, ताकि शासकीय योजनाओं को तैयार करने में लाभ मिले और सही डाटा प्राप्त हो सके। आयोग ने पार्षदों को बताया कि पिछड़ा वर्ग में सम्मिलित जाति के संबंध में 10 अगस्त 2020 को जारी निर्देश में स्पष्ट उल्लेख है का अवलोकन कर सकते है। सामान्य श्रेणी के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग आय के लिए आवश्यक निर्देशों को भी आयोग ने अवगत कराया। आयोग ने कहा कि अन्य पिछड़ा वर्ग एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के सर्वेक्षण कार्य में पार्षदों का सहयोग आवश्यक और अपेक्षित है ताकि हर किसी को सर्वेक्षण से जोड़ा जा सके। निर्वाचित पार्षदों के माध्यम से एवं सर्वेक्षण टीम के समन्वय से अब इस पर काम किया जाएगा।

बैठक में महापौर परिषद के सदस्य एकांश बंछोर, आदित्य सिंह, संदीप निरंकारी, नेहा साहू, चंद्रशेखर गवई, लालचंद वर्मा, मीरा बंजारे, जोन अध्यक्ष रामानंद मौर्या, संतोष नाथ सिंह उर्फ जालंधर, भूपेंद्र यादव, पार्षद मुकेश कुमार अग्रवाल, नोहर वर्मा, संजय सिंह, सविता देवी, लक्ष्मी साहू, शकुंतला देवी, लक्ष्मी दिवाकर,नोडल अधिकारी एन.आर. रत्नेश, सहायक नोडल अधिकारी रीता चतुर्वेदी, जयकुमार जैन एवं राजस्व विभाग के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक राजेश अग्रवाल द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि. छत्तीसगढ़ भवन, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित कर, 204 आकाशगंगा सुपेला, भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक राजेश अग्रवाल shreekanchanpath2010@gmail.com, Mo - 9303289950